

मार्च 2015

कीमत ₹ 10

दादावाणी



अदीठ तप का
पुरुषार्थ

अंतर तप तो भगवान बना देता है। अंतर तप होने पर
आत्म ऐश्वर्य प्रकट होता है। इस दादा का तो असीम
ऐश्वर्य प्रकट हुआ है!

संपादक : डिम्पल महेता

वर्ष : १० अंक : ५

अखंड क्रमांक : ११३

मार्च २०१५

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: अडालज,
जि.: गांधीनगर-382421.

फोन : (079) 39830100

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation

5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Owned by

Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printed at

Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at

Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Total 36 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

१५ साल

भारत : ७५० रुपये

यू.एस.ए. : १५० डॉलर

यू.के. : १०० पाउन्ड

वार्षिक

भारत : १०० रुपये

यू.एस.ए. : १५ डॉलर

यू.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D./M.O.

‘महाविदेह फाउन्डेशन’ के नाम
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

अदीठ तप का पुरुषार्थ

संपादकीय

अक्रम विज्ञान के माध्यम से आत्मज्ञान तो प्राप्त हो गया, अब जागृति अनुभव में परिणामित हो, उसके लिए पाँच आज्ञा पालन के साथ-साथ अन्य क्या उपाय है? आज्ञा ही धर्म और आज्ञा ही तप है। भगवान कहते हैं कि मोक्ष के चार स्तंभ हैं। ज्ञान-दर्शन-चारित्र्य और तप। आत्मा की प्रतीति कि ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’, उसे अनुभव करने के लिए तप की आवश्यकता है।

भगवान ने दो प्रकार के तप बताए : बाह्यतप और अंतरतप। जब बाह्यतप उदय में हों तो भले ही हों, लेकिन अगर न हों तो उन्हें खड़े करने की जरूरत नहीं है। मोक्ष के लिए बाह्यतप नहीं लेकिन अंतरतप की जरूरत है। बाह्यतप शुभ कारण है जबकि अंतरतप शुद्ध का कारण है।

तप करना अर्थात् क्या? पूर्व काल में किए हुए कर्मों के फल जब उदय में आएँ, तब या तो कड़वा होता है या मिठासवाला होता है, उन दोनों में समता रखना, वही तप है। उदय में एकाकार नहीं होना और उसे राग-द्वेष रहित देखते रहना, वही अंतरतप है।

कोई अपमान करे तो ऐसे संयोगों में ज्ञान सेट करें तो संसार व्यवहार में कषाय नहीं होते, लेकिन जब अंदर मन-बुद्धि विचलित होने लगे, हृदय तपे, तब उसे देखते रहना और पुद्गल (जो पूरण और गलन होता है) परिणाम में एकाकार नहीं होना, वही तप है। तब सामनेवाले के प्रति मन के परिणाम नहीं बिगड़ें तो उसी को तप करना कहते हैं।

तप करने को इसीलिए कहा गया है ताकि खुद की आत्म जागृति बढ़े, जगत् निर्दोष दिखाई दे और खुद के ही दोष दिखाई दें। जितने दोष दिखाई देते हैं, उतने चले जाते हैं और ऐसा करते-करते दोष रहित हुआ जा सकता है। जैसे-जैसे पूर्ण तप करे वैसे-वैसे मुख्य वस्तु प्राप्त होती जाती है। तप तो सभी को आते ही हैं, किसी को छुटकारा मिल ही नहीं सकता न! जब तप उदय में आएँ तो हमें तप करना पड़ता है। उस तप के चले जाने के बाद में फिर से तपना नहीं पड़ेगा। अतः जितने तप कम हो गए उतना निबेड़ा आ गया।

यह तप तो ठेठ केवलज्ञान होने तक करना है। अतः शाता (सुख परिणाम)-अशाता (दुःख परिणाम) वेदनीय में या पसंद-नापसंद, ऐसे संयोगों में एकाकार न हों, मन-बुद्धि-हृदय तपे उनमें भी एकाकार न हों, उन्हें खुराक न दें और उन्हें देखा करें तो वह मोक्ष का अदीठ तप कहा जाएगा। खुद के स्वरूप से बाहर न निकले, खुद का और पराया जो है उस हृद में रहे, वह अंतरतप है। आत्मा का शुद्ध उपयोग, वही खरा तप है। जैसे-जैसे तप होता जाएगा, वैसे-वैसे अनुभव दशा बढ़ती जाएगी और वैसे-वैसे आत्मचारित्र्य का अनुभव होता जाएगा।

अंतरतप तो पुरुष हो जाने के बाद का पुरुषार्थ है। तप किए बिना ज्ञान-दर्शन शुद्ध नहीं हो सकते। अतः जब तक शुद्ध न हो जाएँ, संपूर्ण न हो जाएँ, तब तक तप है। ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’, वह दर्शन है। उसका अनुभव हो जाए तो वह ज्ञान है। जितने प्रमाण में अनुभव उतने ही प्रमाण में वीतरागता, उतना ही चारित्र्य। तप से आत्मचारित्र्य प्रकट होता है। संपूर्ण आत्मचारित्र्य प्रकट हो जाए तो वह है पूर्णाहुति और वही अपना ध्येय है।

प्रस्तुत संकलन में ध्येयपूर्ति के लिए विविध संयोगों में अंतरतप द्वारा आत्मचारित्र्य प्रकट होने लगे, तब तक के पुरुषार्थ की तात्त्विक स्पष्टता की गई है जिसके अभ्यास से तप की सटीक समझ विकसित करके ‘केवली’ अनुभव की उच्चतम श्रेणी तक पहुँचने का पुरुषार्थ किया जा सके ऐसा है।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नजर आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

अदीठ तप का पुरुषार्थ

वह दुःख नहीं है, वह है आंतरिक तप

प्रश्नकर्ता : यह ज्ञान लिया है और फिर साधारण व्यवहार में आध्यात्मिक दृष्टि से अपेक्षाएँ रहा करती हैं। वह अपेक्षा क्या चीज़ है ?

दादाश्री : लेकिन अपेक्षाएँ सांसारिक रहती हैं न ?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : संसार की सभी अपेक्षाएँ पूरी हो जाएँगी, इसी जन्म में।

प्रश्नकर्ता : एक व्यक्ति है, व्यवहार में उस व्यक्ति से हमने अपेक्षा रखी कि यह व्यक्ति ऐसा करे, इस प्रकार बरताव करे और वह वैसा न करे तो उसे क्या कहेंगे ?

दादाश्री : वह वैसा न करे तो भी व्यवस्थित और करे तो भी व्यवस्थित।

प्रश्नकर्ता : उससे जो दुःख होता है, वह ?

दादाश्री : वह तप है, वह दुःख नहीं है। ज्ञान-दर्शन-चारित्र और फिर तप, यह चौथा स्तंभ है। मोक्ष में जाने के लिए चार स्तंभ चाहिए, उसमें से क्या चौथा स्तंभ निकाल देना है आपको ? तीन पैरों का ही पलंग रह जाएगा फिर !

प्रश्नकर्ता : लेकिन उससे दुःख होता है, उस दुःख को क्या समझें ?

दादाश्री : वह तप है, वह दुःख नहीं है !

अब आपको दुःख तो आते ही नहीं हैं, तप ही आते हैं। वह तप तो आना ही चाहिए न ! और आंतरिक तप कहा जाता है इसे।

प्रश्नकर्ता : ऐसा तप काफी आता है।

दादाश्री : वह जितना ज्यादा आएगा न, उतना ही समझना कि यह शुद्ध होने लगा है। इसलिए आने दो। अभी तो आपको कहना है कि ‘अभी तो आप कम आ रहे हो, सभी आओ न !’

प्रश्नकर्ता : बुलाते हैं....

दादाश्री : हाँ, बुलाओ, बुलाओ। दादा मिल गए हैं अब। ‘आना हो तो आओ, घबराना मत’, ऐसा कहना। वे घबराएँ, लेकिन हम नहीं घबराएँगे !

अक्रम विज्ञान का तप

प्रश्नकर्ता : अपने अक्रम विज्ञान में तप करने की जगह कौन सी है ?

दादाश्री : तप करने का मतलब क्या है कि पिछला हिसाब चुकाना है और चुकाते समय मिठास भी आती है और कड़वापन भी आता है। जब मिठास आए तो वहाँ पर तप करना है और कड़वा आए वहाँ पर भी तप करना है। वे फल दिए बगैर तो रहेंगे ही नहीं न ! डिस्चार्ज कर्म के फल मिठास में मीठा देते हैं और कड़वाहट में कड़वा देते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा आपने समझाया है

कि 'नगीनभाई मुझे गालियाँ दें, तो मुझे तुरंत पता चल जाता है कि यह तो मेरे कर्मों के उदय हैं, उनका कोई दोष नहीं है', तो फिर यहाँ पर तप कहाँ आया ?

दादाश्री : उसे ज्ञान कहते हैं। उस ज्ञान से तप हुआ। तप करने का मतलब क्या है ? खुद को तप नहीं करना पड़ता। अंदर मन-बुद्धि तपते हैं, मन-बुद्धि जो तप रहे हैं उन्हें समतापूर्वक देखते रहने को ही तप कहते हैं। उन्हें समतापूर्वक देखते रहना है। तन्मयाकार नहीं हो जाना है। इस पूरे जगत् में, जब मन-बुद्धि तपते हैं तो उनके साथ खुद भी तप जाता है और अगर साथ में ये नहीं तपे तो उसे सूक्ष्म तप कहा जाता है। मन-बुद्धि तप जाते हैं या नहीं तप जाते ?

प्रश्नकर्ता : तपते हैं, तब तक तप करना पड़ता है।

दादाश्री : करना नहीं पड़ता, तप स्वाभाविक रूप से होता ही है।

अंतर तप से ही मोक्ष

इन दुनियादारी चीजों के लिए क्यों हाय-हाय करें ? बेटा या बेटी को वैधव्य आया या नहीं ? बेटा मर गया तो गया। अनंत जन्मों से किसके बच्चे थे ? किसका बेटा था ? शरीर भी किसका था ? अगर पहले से ही प्लस-माइनस करके बैठ जाएँ तो झंझट ही मिट जाए न ! सही है या गलत ? उसके बाद बही खाते में कहीं ठगे जाने को रहा ही नहीं न ! मैं तो पहले से प्लस-माइनस करके बैठ गया था। सेफसाइड होनी चाहिए वह तो ! बेटा मर जाए तो फिर तुरंत ही दादा का ज्ञान हाज़िर ! ऐसा तप तो लोगों को याद तक नहीं आता, उस घड़ी संताप रहता है। दुनियादारी की चीजें ऐसी हैं कि जो आत्म ऐश्वर्य प्रकट करें ! लेकिन इसने तो आत्म ऐश्वर्य ले लिया बल्कि।

तप का मतलब क्या है ? चाहे कुछ भी हो

जाए, बेटा मर गया, उसके बाद अंदर तो मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार हिलाकर रख देते हैं। लोग भी कहते रहते हैं कि अब यह संपत्ति कौन भोगेगा, वंश कैसे चलेगा ? ऐसा सब हो तो तप करते रहना है। यह है आंतरिक तप, अंतर तप से ही मोक्ष होता है।

ज्ञान से मोक्ष होता है, दर्शन से मोक्ष होता है, चारित्र से मोक्ष होता है और तप से मोक्ष होता है। चार स्तंभ हैं। ये चारों ही स्तंभ इन पाँच आज्ञाओं में रख दिए हैं।

तपे हुए का शांत भाव से सहन करना वही तप

ये लोग तो तप करने जाते हैं। अरे, तप किसी से सीखकर नहीं करना है। तेरा मन ही रात-दिन तपा हुआ रहता है न ! तेरा मन, वाणी और वर्तन जो तपे हुए हैं, उन्हें तू शांत भाव से सहन कर। वही खरा तप है !

प्रश्नकर्ता : उसे अंतर तप कहा जाता है ?

दादाश्री : हाँ, यहाँ से कोई सात मील दूर हो और उसे रास्ते में आवाज़ें दें तो क्या कुछ होगा ?

प्रश्नकर्ता : नहीं होगा, नहीं होगा।

दादाश्री : वह रास्ता तो पार करना ही पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : दादा, हम सभी अभी ऐसे ही रास्ते पर चल रहे हैं।

दादाश्री : सभी ऐसे ही रास्ते पर थे न !

प्रश्नकर्ता : कई बार बहुत अंतर तप करना पड़ता है।

दादाश्री : अभी तो करना ही पड़ेगा न रास्ते में। अगर अंतर तप नहीं करेंगे तो हम इसमें से निकल नहीं पाएँगे। यदि इसमें से निकलना हो तो अंतर तप करो। फिर से नहीं आएगा वापस। फिर यह योग आएगा ही नहीं।

अंतर तप का अर्थ क्या है ?

प्रश्नकर्ता : अंतर तप का अर्थ क्या है ?
अंतर तप को किस तरह से समझा जा सकता है ?

दादाश्री : खुद के स्वरूप से बाहर नहीं निकले, वही अंतर तप है। जो खुद का और पराया है, वह उसकी हद में ही रहे, तो उसे अंतर तप कहते हैं।

अगर हम जान जाएँ कि यह घर अपना है और यों लक्ष्मण रेखा बना दी और यह खेत अपना, और यह अपना नहीं है। तो पहले जिस खेत में जाते थे, अब उस तरफ नहीं जाना है, ऐसी जागृति रखना, उसी को तप कहते हैं। तप अन्य कुछ नहीं है। और कोई गालियाँ दें तो उस समय ऐसा रखना है कि हम आत्मा हैं, अर्थात् उस समय मन अंदर लाल-लाल हो जाता है। तब भी तप करना पड़ता है।

अब सुबह के समय अगर चाय में चीनी डालना भूल गए हों और हम ऊपर की मंजिल पर बैठे हों और वहाँ पर आकर दे जाएँ, तो हम क्या समझेंगे ? फीकी लगे तो तुरंत ही समझ जाते हैं कि व्यवस्थित है यह। अर्थात् व्यवस्थित का अवलंबन लेकर आप शांत तो हो जाते हो, लेकिन मन अंदर दावे करेगा, मन परेशान करेगा, उस समय तप करना है। मन जो उछल-कूद करे उसे देखते रहना है। और जब इस चाय का पूरा हो जाएगा तब फिर किसी और चीज में घुस जाएगा। चाय पीकर लौंग मुँह में डालें तो मन वापस लौंग में पड़ जाएगा, चाय को भूल जाएगा। उस समय तप करना है। मन की ज़रा सी भी छाप नहीं पड़नी चाहिए। मन दाँव पेच चलाए तो हमें उसमें तन्मयाकार नहीं होना है। यानी कि उसे देखते रहना है, देखने में तो हर्ज नहीं है, तब फोटो नहीं खिंचता! लेकिन अगर अंदर ढीले पड़ जाएँ तो फोटो खिंच जाता है। अतः वहाँ पर तप होता है। क्या नाम है ?

प्रश्नकर्ता : चंदूभाई!

दादाश्री : चंदूभाई! कोई अभी रास्ते में मिल जाए और कहे कि 'चंदूभाई, नालायक इंसान है और उनमें अक्ल नहीं है', और अगर वह आपको सुनाई दे तो आपको ऐसा तो लगेगा ही कि इन्होंने जो कहा है, वह व्यवस्थित है और अब मैं चंदूभाई कहाँ हूँ ? मैं तो शुद्धात्मा हूँ। फिर भी मन परेशान करेगा। 'ऐसा कैसे कह सकता है ? अपने आपको क्या मानता है ?' तो उस घड़ी अपना हृदय तप जाएगा। उसे तपता हुए देखते रहना, लाल, लाल, लाल हो जाए उसे देखते रहना है। धीरज रखना, उसी को तप कहा जाता है। पॉसिबल हो सकता है या नहीं हो सकता ?

प्रश्नकर्ता : हाँ, अब वैसा करना है।

तप करने हैं, घर बैठे

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने जो यह तप सिखाया है, तो फिर हमारे उपाश्रय वगैरह तो बंद हो जाएँगे। यह तो हमारे घर में ही तप हो गया।

दादाश्री : नहीं, लेकिन वे सब बंद नहीं होंगे न! यह अंदर का तप तो, जिन लोगों ने यह ज्ञान लिया है न उतने ही लोगों को रास आएगा। जिन्होंने ज्ञान नहीं लिया है, यह अंदर का तप उनसे नहीं हो सकता न!

प्रश्नकर्ता : हमें तो घर में ही तप मिल गया। हमारा बेटा, हमारी पत्नी हमें तप करवाते हैं।

दादाश्री : इसका मतलब ऐसा है न, अब आपको पता चला कि अरे यह अपना छोटा बेटा है लेकिन मेरा थर्मामीटर है। अगर मुझे बुखार चढ़े तो तुरंत ही पता चल जाता है उससे। वह टेढ़ा बोले तो अंदर हमें अकुलाहट होती है, तो हम समझ जाते हैं कि इसकी वजह से बुखार चढ़ा। अतः यह थर्मामीटर है। और बुखार नहीं चढ़े तो हमें समझना है कि थर्मामीटर छुआने से भी बुखार नहीं चढ़ रहा है, पक्का हो जाता है। अतः बेटा बगैरह सभी

थर्मामीटर हैं। अब ऐसा थर्मामीटर कहाँ से लाएँ। इतना बड़ा थर्मामीटर कहाँ से लाएँ? मैं यह जो बता रहा हूँ, मेरी यह बात आप तक पहुँच रही है?

प्रश्नकर्ता : वही अंतर तप है?

दादाश्री : और क्या? वही अंतर तप है न, और कौन सा?

अंतर तप भोजन के समय

मोक्ष में जाना हो तो उसे अंतर तप करना ही पड़ेगा। (खाने में) नमक ज्यादा डल जाए तो हमें अंतर तप करके उसे खा लेना है। उसके बाद जब वे (पत्नी) खाएँ और पूछें कि 'नमक ज्यादा डल गया था। आपको पता नहीं चला?' तब कहना, 'पता चल गया था लेकिन आपको भी पता चलेगा इसीलिए हमने नहीं बताया। आपको पता चलेगा ही तो फिर मुझे कहने की क्या ज़रूरत है? मैं क्या नोटिस बोर्ड हूँ?'

'दाल में नमक कम है', वह अगर नोटिस बोर्ड पर आ गया तो फिर पलभर भी शांति नहीं रहेगी। इस काल का हिसाब तो देखो, यह कैसा भीषण काल है, सुलगता हुआ काल है और उसमें फिर, 'यह नमक क्यों ज्यादा डाल दिया?' ओहोहो! ये नमक नहीं खानेवाले! सतयुग में खाना था न आराम से, अभी क्यों खाने आया है, भाई! अभी खा ले न सीधी तरह से, नहीं तो अभी थाली बाहर रख आएँगे। 'नमक ज्यादा क्यों डाला', ऐसा कहकर उसकी गलती निकालता है वापस! अभी तो जैसे-तैसे करके खा ले। काम पूरा कर लेना है। रात न बिगड़े, हिसाब उतना साफ कर लेना है। वर्ना ज्यादा झगड़ा हो जाए तो रात बिगड़ जाएगी। तब पत्नी ऐसे घूमकर सो जाती है और आप ऐसे घूमकर सो जाते हो। तो आपको उत्तर दिशा दिखाई देता है और उन्हें दक्षिण दिखाई देता रहता है। मेल ही नहीं खाता न यह! अतः जैसे-तैसे करके सीधा कर लेना पड़ेगा।

ये सभी बाह्य तप शुभ के कारण हैं जबकि आंतरिक तप शुद्ध का कारण है।

अनिच्छित रकम को तप से खत्म करो

अपना तप कैसा होना चाहिए कि तपना है, मन को तपाना है अर्थात् मन का जब वह टाइम आ जाए न, मन तपने लगे तो मन को खुराक की ज़रूरत पड़ती है। उस समय तो जो उसे मीठा लगे वैसा भोजन दे दो। अगर घर की कोई चीज़ याद करके उसे मन में डाल दो या कुछ और डाल दो, तो वह तप नहीं कहलाएगा। तप तो, अगर उस समय आत्मा से जोड़ दें, आत्मा का शुद्ध उपयोग रखें, तो तप कहलाएगा।

इन लड़कों से मैं पूछता हूँ, 'अरे, मन में कोई परेशानी या चिंता होती है तब क्या करते हो?' तब कहते हैं, 'सिनेमा वगैरह में टाइम बिता देते हैं।' यानी कि सब बेच खाते हैं। जब तप करने का समय आया तब सिनेमा में जाकर मौज कर आते हैं। यानी कि सौ का नोट दो रुपये में दे दिया। हमें तो ऐसा करना चाहिए कि सौ का नोट हजार का हो जाए, उस हद तक। अर्थात् जब ऐसा हो तो उस घड़ी उन सभी के अंदर बैठे हुए शुद्धात्मा के दर्शन करने हैं। दूसरी चीज़ देखनी, तीसरी चीज़ देखनी या फिर अपने घरवालों के, आसपासवालों के, रिस्तेदारों के प्रतिक्रमण करने चाहिए। रिस्तेदारों के साथ तो सभी गड़बड़ हुए ही होती है न? उन सभी के साथ, पड़ोसी के साथ जो कुछ हुआ है वह देखना है, तीसरा घर, चौथा घर, पाँचवाँ घर, इस तरफ के घर। फुरसत के समय में सभी के प्रतिक्रमण करने हैं। ऐसा सब सेट कर देना है। सबकुछ साफ किया कि साफ-सुथरा। आपको ही करना पड़ेगा। अन्य कोई नहीं करेगा न? क्या अन्य कोई ऐसा करने लगेंगे? तो क्या वाइफ करेगी? वह अपना करे या आपका करे? अतः ऐसा सब आपको सेट करना पड़ेगा, तब वह तप कहलाएगा। तप अर्थात् मन को इच्छित

वस्तु नहीं देना, और ही (पुरुषार्थ के) रास्ते पर लगा देना। मन को इच्छित वस्तु दे देते हो न?

प्रश्नकर्ता : कभी-कभी दे देनी पड़ती है।

दादाश्री : वह बात ठीक है। कभी-कभी में हर्ज नहीं है। वर्ना ऐसा तप तो मिलता ही नहीं है न। और उस समय आप कहते हो, वहाँ होटल में ले जाकर मन को आनंद करावाते हो, वह नहीं चलेगा। नापसंद रकम में तप से भाग लगाओ तो जवाब में शून्य आ जाएगा!

नहीं है मेहनत अमल में लाने के लिए

प्रश्नकर्ता : अदीठ तप बहुत ही मुश्किल चीज़ है। क्योंकि ऐसी चीज़ जो नापसंद हो, देखने के बावजूद भी उसका निराकरण करना, वह वास्तव में बहुत ही कठिन चीज़ है लेकिन अब उसे अमल में कैसे लाएँ वह बताईए।

दादाश्री : अपना ज्ञान है ही ऐसा कि वह अमल में आ ही जाता है। इन साहब ने कुछ कहा हो और अंदर आपका हृदय तपने लगता है। तब फिर अपना ज्ञान आपको (अंदर) क्या कहता है? 'जो कहा है' वह व्यवस्थित है।' ऐसा सब करके फिर वह तपा हुआ यों ही गायब हो जाता है। तपता तो है ही।

प्रश्नकर्ता : तपता है, वही मैं कह रहा हूँ।

दादाश्री : वह तो तपता है इस तरह, ज्ञान से फिर वह खत्म हो जाता है। तपे बगैर तो रहता ही नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह अदीठ तप नहीं कहलाता है न?

दादाश्री : वही तप है।

ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप, ये चार स्तंभ समझ गए न? जैसे-जैसे तप पूर्ण करते जाते हैं

वैसे-वैसे मूल वस्तु प्राप्त होती जाती है। तप तो पूर्ण करना ही चाहिए न?

ज्ञान से खत्म हो जाते हैं तप

प्रश्नकर्ता : क्या ऐसा है कि यह अदीठ तप करना ही पड़ेगा? हम मन-बुद्धि वगैरह सभी को समझाते रहें, तो फिर उन्हें जो चिरमिराहट होती है, वह बंद नहीं हो जाएगी?

दादाश्री : हमें भी अदीठ तप करना पड़ता है, हमें अपने हिसाब का करना पड़ता है। ठेठ तक अदीठ तप करना है। मन चिढ़ जाए, बुद्धि चिढ़ जाए तो भी हमें उन्हें देखते ही रहना है। उस समय तप होता है। बंद तो होगा ही नहीं। वह तप आपको अंदर करना है, वह तप तो अपने आप हो ही जाता है। अब वहाँ पर यदि चंदूभाई सामनेवाले को डाँटे, तब मन में संतुष्ट हुए कि हमने जो उसे डाँटा है वह ठीक है, तो इसका मतलब उसे तप नहीं रहा। वह हमें कुछ भी कहे लेकिन अगर हमने उसे डाँटा तो उस घड़ी हमें तप नहीं करना पड़ता। अतः वहाँ पर डाँटना नहीं है हमें, तब उस समय फिर तप ही होगा न! मन अकुलाता ही रहेगा न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन क्या दादा के ज्ञान से वह अकुलाहट चली नहीं जाती?

दादाश्री : वह चली जाती है लेकिन धीरे-धीरे जाती है। एक-दो बार अकुलाहट होती है और फिर तीसरी बार वह चली जाती है। बाद में फिर और कोई बात आती है तब वापस दूसरे में अकुलाहट होती है और फिर प्रेक्टिस ज्यादा हो जाए तो वह चली जाती है। लेकिन जैसे-जैसे इस तरह कहते जाएँ, वैसे-वैसे कुछ बदलाव होगा। तप हुआ है आपको? कितनी बार हुआ है?

प्रश्नकर्ता : बेहिसाब, बहुत बार, बहुत बार, दादा।

दादाश्री : ओहो! अभी भी बहुत बार होता

रहता है। जब तक हम पूरी तरह से ज्ञान में न आ जाँ, तब तक होता रहेगा।

तप, यात्रा के समय

प्रश्नकर्ता : यात्रा में तरह-तरह के तप खड़े होते हैं न, वहाँ पर ये सब तप करने पड़ते हैं, तब कच्चे पड़ जाते हैं।

दादाश्री : कच्चे पड़ जाते हो, लेकिन वह भी याद आता है न? फिर वह जागृति याद आती है न? कच्चे पड़ जाओगे और अभी वैसा अनुभव हुआ ही नहीं है न इसीलिए। एकदम से ऐसा अनुभव होने तक ही कच्चा पड़ेगा न, लेकिन बाद में अनुभव हो जाएगा न। अगर अनुभव नहीं होगा तो बेकार चला जाएगा। कच्चे ही रह जाओगे। कच्चे पड़ गए इसलिए वे (अनुभवों पर से) पक्के हो गए। कच्चा ही नहीं पड़ा तो पक्का किस तरह से होगा? वह तो अगर यात्रा में ऐसी परेशानी आएँ न, जितनी आएँ उतना ही ज्यादा उस जगह पर जाना चाहिए। ज्यादा टकराव आए तो समझना कि हमें ज्यादा अनुभव हुए।

'न्याय स्वरूप' जगत् मेंउपाय है तप

प्रश्नकर्ता : टकराव टालने की, 'समभाव से निकाल' (निपटारा) करने की हमारी वृत्ति होती है, फिर भी सामनेवाला व्यक्ति हमें परेशान करे, अपमान करे, तो क्या करना चाहिए हमें?

दादाश्री : कुछ नहीं। वह अपना हिसाब है, तो उसका 'समभाव से निकाल' करना है आपको ऐसा निश्चित रखना चाहिए। आपको अपने नियम में ही रहना चाहिए, और हमें अपने आप अपना 'पज़ल' 'सॉल्व' करते रहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : सामनेवाला व्यक्ति अपना अपमान करे और हमें अपमान लगे, उसका कारण अपना अहंकार है?

दादाश्री : सच में तो सामनेवाला अपमान

करता है, तब आपका अहंकार पिघला (विलय कर) देता है, और वह भी 'ड्रामेटिक' (नाटकीय) अहंकार। जितना एक्सेस (अत्यधिक) अहंकार होता है वह पिघलता है, उसमें क्या बिगड़ जानेवाला है? ये कर्म छूटने नहीं देते हैं। हमें तो, छोटा बच्चा सामने हो तो भी कहना चाहिए, 'अब छुटकारा कर।'।

आपके साथ किसी ने अन्याय किया और आपको ऐसा हो कि मेरे साथ यह अन्याय क्यों किया, तो आपको कर्म बँधेगा। क्योंकि आपकी भूल को लेकर सामनेवाले को अन्याय करना पड़ता है। अब यहाँ कहाँ मति पहुँचे? जगत् तो कलह करके रख देता है! भगवान की भाषा में कोई न्याय भी नहीं करता और अन्याय भी नहीं करता। 'करेक्ट' करता है। अब इन लोगों की मति कहाँ से पहुँचे? घर में मतभेद कम हो, तोड़फोड़ कम हो, आसपासवालों का प्रेम बढ़े तो समझना कि बात समझ में आ गई, नहीं तो बात समझ में आई ही नहीं।

ज्ञान कहता है कि तू न्याय खोजेगा तो तू मूर्ख है! इसलिए उसका उपाय है, तप! किसी ने आपके साथ अन्याय किया हो, तो वह भगवान की भाषा में 'करेक्ट' हैं। जिसे संसार की भाषा में 'गलत किया', ऐसा कहेंगे।

यह जगत् न्याय स्वरूप है, गप्प नहीं है। एक मच्छर भी यों ही आपको छू जाए, ऐसा नहीं है। मच्छर ने छुआ यानी आपका कोई कारण है। बाकी यों ही एक स्पंदन भी आपको छुए ऐसा नहीं है। आप संपूर्ण स्वतंत्र हो। किसी की दखल आपमें नहीं है।

प्रश्नकर्ता : टकराव में मौन हितकारी है या नहीं?

दादाश्री : मौन तो बहुत हितकारी कहलाता है।

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : दादा, बाहर मौन होता है, और अंदर तो बहुत घमासान चल रहा होता है, उसका क्या होगा ?

दादाश्री : वह काम का नहीं है। मौन तो सब से पहले मन का चाहिए।

सत्पुरुष का मौन तपोबल

प्रश्नकर्ता : मौन को तपोबल कहा जाता है तो वह किस अर्थ में ?

दादाश्री : मौन तपोबल अर्थात् जिस जगह पर व्यक्ति मौन नहीं रह सकता, वहाँ पर यदि मौन रहे तो वह मौन तपोबल में आता है। नौकर ने प्याला फोड़ा, वहाँ पर अगर मौन रहे, तो वह तप है। इसलिए मौन जैसी सख्ती इस जगत् में कोई नहीं है। बोलने से सारी सख्ती व्यर्थ जाती है। सब से बड़ा तप मौन है। बाप के साथ झगड़ा हो जाए तब अगर मौन पकड़ ले तो तप होता है। उस तप में अंदर का सबकुछ विलय हो जाता है और उसमें से साइन्स उत्पन्न होती है। आजकल तो लोग मौन लेते हैं और दूसरे दिन एक साथ सारी भड़ास निकाल देते हैं! मौन तपोबल तो बहुत काम *निकाल* देता है। पूरे जगत् का कल्याण कर देता है, इसीलिए कवि ने लिखा है न, '*सत्पुरुषनुं मौन तपोबळ, निश्चय आखा जग ने तारे!*'

इन दादा के पास सभी कुछ कहने की छूट है फिर भी वे मौन रहते हैं, उसे मौन तपोबल कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : मौन किसे कहते हैं ?

दादाश्री : आत्मार्थ के लिए जो-जो कहा जाता है, वह सब मौन ही माना जाता है।

प्रश्नकर्ता : स्थूल बोलना बंद करके मौन का पालन करे, तो वह हितकारी है ?

दादाश्री : स्थूल मौन तो स्थूल अहंकार को

बहुत छिन्न-भिन्न कर देता है। इस संसार का सारा जंजाल शब्दों में से ही खड़ा हुआ है। मौन से तो बहुत ही शक्ति बढ़ जाए ऐसा है और बाहर की वाणी से लोगों को दुःख हो जाता है, वह पत्थर की तरह लगती है। तो मौन के दिन तो उतना बंद रहेगा न ? मौन संयम लाता है। यह स्थूल मौन भी संयम लाता है। वह अहंकार का मौन कहलाता है। और 'मैं शुद्धात्मा हूँ', इस प्रकार से जागृत रहे तो वह शुद्धात्मा का मौन कहलाता है।

मौन परिणामित होता है तप में

प्रश्नकर्ता : सामनेवाले का व्यू पोइन्ट (दृष्टिकोण) समझ में नहीं आए तो क्या करें ?

दादाश्री : मौन रहो। मौन रहने से बुद्धि हीन इंसान भी समझदार माने जाते हैं। कभी कहते हैं कि 'तुझमें बरकत नहीं है।' तब मौन रहना। और उस समय यदि आप विरोध करने लगे तो वह उसे याद रहेगा और कहेगा कि, 'यह तो बिना बरकत का ही है।' सुषमकाल में मन से बंधन था। इस दूषमकाल में वाणी से ही बंधन है।

प्रश्नकर्ता : वाणी का तप यानी क्या ?

दादाश्री : वाणी का तप यानी वाणी का तप, दो प्रकार का होता है। एक तो, आज्ञा लेकर न बोलना और दूसरा खुद अपने आप न बोलना। यदि वाणी का तप ठीक तरह से किया जाए तो उससे बहुत फायदा है। वाणी में निरी शक्ति ही खर्च हो जाती है। क्या लोग लकड़ियों से लड़ाई करते हैं घर में या वाणी से मारते रहते हैं ? लकड़ियाँ धौल नहीं लगाती हैं न ? 'तू ऐसी और तू वैसी। तेरा बाप ऐसा और तेरा बाप ऐसा है।' उस बेचारी को ऐसा सब सुनाता है। वह भी कहती है, 'आप ऐसे हो, आपका बाप ऐसा था।' कोई मारता-वारता नहीं है। हैं संस्कारी लोग। संस्कार हैं, इसलिए मारते नहीं हैं लेकिन फिर यह वाणी का झगड़ा (तूफान) आ गया। यदि वाणी

पर कंट्रोल किया जाए तो बहुत पुण्य मिलेगा, अंदर बहुत शक्तियाँ बढ़ जाएगी।

ये शब्द नहीं होते न तो मोक्ष तो सरल है। इसलिए किसी के लिए एक अक्षर भी नहीं बोलना चाहिए। किसी को झूठा कहना खुद के आत्मा पर धूल डालने के बराबर है। ऐसे शब्द बोलना यानी बहुत जोखिमदारी है यह सब। उल्टा बोलने पर भी और उल्टा सोचे तो भी उसके अंदर खुद पर ही धूल पड़ेगी। इसलिए जितना उल्टा बोले उसका आपको प्रतिक्रमण करना चाहिए तो उससे छूट पाओगे।

तप करना है, जागृति के लिए

प्रश्नकर्ता : ये सभी जो फाइलें हैं न, तो पूरे दिन इतने सारे खुद के दोष दिखते हैं कि अब मैं अपने आप से बहुत उकता गई हूँ।

दादाश्री : वैसा तो होगा ही।

प्रश्नकर्ता : पूरे दिन इतने सारे दोष दिखते हैं, क्षण-क्षण।

दादाश्री : दोष दिखाई देते हैं, इसलिए वे दोष चले जाएँगे। दोष दिखाई देंगे तो आत्मा हो गया। शुद्ध हो जाए तभी दोष दिखाई देते हैं!

प्रश्नकर्ता : लेकिन पूरे दिन? हर क्षण?

दादाश्री : हाँ, बल्कि (खुद के) दोष दिखाई दे तो अच्छा है। इसीलिए तप करने को कहा है ताकि खुद के दोष दिखाई देने से जागृति आती है, वह जागृति ही दोष दिखाती है।

ऋणानुबंधनवाले के सामने ज़रूरत जागृति की

प्रश्नकर्ता : जिनके साथ कुछ ऋणानुबंध हो, उन्हीं से टकराव हो जाता है न? अन्य किसी से टकराव नहीं होता न?

दादाश्री : वह तो पहले के हिसाब होते हैं न, वहीं पर टकराव होते हैं।

प्रश्नकर्ता : अब मेरा किसी के साथ टकराव नहीं होता, सभी जगह संभाल लेता हूँ लेकिन इनके साथ छः आठ महीने में, हालाँकि अभी बहुत कम हो गया है लेकिन इनके साथ आंतरिक तप नहीं हो पाता, इन्हें कुछ कह ही देता हूँ।

दादाश्री : उसमें हर्ज नहीं है। उसका निकाल किए बिना तो चारा ही नहीं है न! उन्हें निकाल करना है, और तुम्हें निकाल करना है, वहीं पर टकराव हो जाता है इसलिए किसी एक इंसान की गलती है ऐसा नहीं कहा जा सकता, दोनों की ही गलती होती है। किसी की चालीस प्रतिशतवाली, किसी की साठ प्रतिशतवाली, किसी की तीस प्रतिशतवाली, फिर अस्सी प्रतिशत, सत्तर प्रतिशत होती है, दोनों की कुछ न कुछ गलती है ही।

प्रश्नकर्ता : और फिर समाधान तो आ जाता है, दो-पाँच मिनट में।

दादाश्री : वह तो आ जाता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन तब उसमें पराक्रम खर्च हो जाता है। अगर संयोग संभाल लें तो आनंद होता है लेकिन अभी तक संभाल नहीं पाते।

दादाश्री : धीरे-धीरे वैसी जागृति रखनी है। आप जैसे-जैसे मेरे साथ रहोगे न, जैसे-जैसे परिवर्तन होता जाएगा। मेरा एक ही शब्द आपके कान में पड़ जाए न तो वह शब्द ही काम करता रहता है।

प्रश्नकर्ता : वह कहावत है न, निशाने से बचा वह सौ वर्ष तक जीवित रहता है। उस तरह से ये जो हमारे कषाय उत्पन्न होते हैं, उन पर यदि काबू आ जाए तो कितना कुछ जीत लेंगे!

दादाश्री : ऐसा है न, काबू किसे कहते हैं? हम जब चाहें तभी कर सकें। अपना ज्ञान हमें मिल गया है तो ये सब (कषायों) कंट्रोल में ही रहेंगे, ज्ञान ही काम करेगा।

अतः उसका सब से अच्छा उपाय यह है कि 'चंदूलाल, कैसे है, कैसे नहीं', ऐसे बातें करनी चाहिए, वही उपाय है, क्या कहना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : उसके साथ निरंतर बातें करना और कहते रहना चाहिए कि 'यह अच्छा नहीं है। निशाना क्यों चूक जाते हो?'

दादाश्री : ऐसा कह सकते हो, ऐसा सब तो कहा जा सकता है। उसके बाद अगर वापस चूक जाओ तो फिर से कहना है और प्रतिक्रमण करना है। प्रत्याख्यान भी करना ही पड़ेगा। नहीं तो फिर ऐसा मान लेगा कि यह सही था।

दुःख खड़े हैं नासमझी से

प्रश्नकर्ता : नापसंद चीजें करनी पड़ें तब अंदर तप रहता है या नहीं रहता?

दादाश्री : तप रहे तभी काम का है न! तप नहीं हो तो कर्म बाँधता है।

प्रश्नकर्ता : वह समझाइए न, दादा। कर्म कैसे बाँधता है?

दादाश्री : अच्छा नहीं लगे, मजबूरी में करे तो पाप बाँधता है। तप ही होना चाहिए। जो अंदर (समझ) से करेक्ट हो।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसमें भोगवटा (सुख या दुःख का असर, भुगतना) रहता है या नहीं रहता?

दादाश्री : तप ही रहता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उस तप में भोगवटा नहीं रहता न?

दादाश्री : भोगवटा कब तक रहता है? नासमझी हो तभी तक। यह सही था और इसे छोड़ना पड़ा, वह नासमझी से। सही-गलत होता ही नहीं है न! यह तो खुद की समझ से तय करता है। उसके पास है कोई डिसिज़न का साधन? कोई साधन नहीं है।

जहाँ अच्छा नहीं लगता हो वहाँ तप

जहाँ अच्छा नहीं लगता वहाँ अपने आप ही तप हो जाता है। अनिच्छित करना पड़े उस समय अदीठ तप कहलाता है। जब ऐसा होता है तब मन प्रतिरोध करता है वहाँ पर, उस समय तप करना है हमें। तप बार-बार नहीं आते हैं न? अतः जब मन तपे तब उस समय हमें देखते रहना है। मन तो तपे बगैर रहेगा ही नहीं न! उसे जो आदत पड़ गई है अगर उस आदत के विरुद्ध कुछ होगा तो मन तपेगा ही। नहीं? फिर अगर यहाँ पर आदत डाल दी जाए तो उसे कुछ भी नहीं। जलेबी खाकर चाय पीते समय मन परेशान कर देता है, 'अरे फीकी लगी।' अरे भाई, लेकिन तूने जलेबी खाई ही क्यों अभी?

अब वह कहता है 'अंदर अच्छा नहीं लगता तो क्या करना चाहिए?' मैंने कहा, 'जो अच्छा नहीं लगता वहीं पर तप करना है', क्योंकि कोई भी संयोग प्राप्त होना उदय के अधीन है और अच्छा नहीं लगे तो वे दोनों नहीं चलेंगे। जो-जो उदयाधीन चीजें होती हैं उसमें तप सहन करना चाहिए। तप में तपना उसी को तप कहते हैं। तप को आमंत्रित नहीं करना है। आया हुआ तप करना है। जो सोचा भी न हो बेटा ऐसे बोल देता है। बेटे की पत्नी भी वैसा बोल देती है। उसे ग्रहण नहीं करना है, निकाल कर देना है। त्याग करनेवाला अहंकारी होता है। 'मैंने त्याग किया', कहता है। उसे ग्रहण करनेवाला अहंकारी होता है और निकाल करनेवाले को तो कुछ चाहिए ही नहीं। निकाल अपने आप ही हो जाता है।

पसंद-नापसंद फाइलों के साथ....

अब हमें जो अच्छे लगते हैं वे भी 'फाइल' हैं और जो अच्छे नहीं लगते हैं वे भी 'फाइल' हैं। जो अच्छे नहीं लगते, उनके साथ जल्दी निकाल करना पड़ेगा। जो पसंद हैं उनके साथ निकाल हो जाएगा। नापसंद हैं अर्थात् पूर्वजन्म की ज़बरदस्त

‘फाइल’ है। हमें देखते ही अच्छी नहीं लगती। वह आकर बैठे, तब हमें क्या करना चाहिए? मन में तय करना है कि ‘फाइल का समभाव से निकाल करना है’। फिर कहना, ‘आप आए, बहुत अच्छा हुआ। बहुत दिनों के बाद आए, हमें बहुत अच्छा लगा। ज़रा इनके लिए चाय ले आओ, नाश्ता ले आओ।’ ‘फाइल का निकाल’ करने लगे तो निकाल होने लगेगा लेकिन सभी कुछ सुपरफ्ल्युअस करना है, ड्रामेटिक! वह समझे कि, ‘ओहोहो, ये मुझ पर बहुत भाव प्रदर्शित कर रहे हैं।’ वह खुश हो जाएगा और सारा बैर भूल जाएगा। बैर छूट जाए तो ‘समभाव से निकाल’ हो जाता है। वह उठकर जाने लगे तब आप कहना कि, ‘देखना भाई, हमारा कोई दोष हुआ हो तो....’ तब वही कहेगा कि, ‘नहीं, नहीं, आप तो बड़े अच्छे इंसान हो।’ तो फिर हिसाब चुकता हो गया। इन लोगों को कुछ भी नहीं चाहिए। अहंकार को पोषण मिला तो बहुत हो गया।

कोई व्यक्ति मारने आया हो, खून करने आया हो लेकिन आपके मन में ऐसा भाव उत्पन्न हुए कि ‘फाइल का निकाल’ करना है तो तुरंत ही उसके भाव बदल जाएँगे और तलवार या छुरी नीचे रखकर चला जाएगा।

ऐसा है कि अगर फाइल के प्रति प्रेजुडिस (पूर्वग्रह) छोड़ दोगे तो वह फाइल आपके कहे अनुसार करेगी। हमारे कहे हुए शब्दों में रहे न तो संसार अच्छी तरह चलेगा और मोक्ष में भी जाया जा सकेगा। इतना सुंदर विज्ञान है यह! और प्रतिक्षण विज्ञान का उपयोग हो सकता है लेकिन विज्ञान का उपयोग करना आना चाहिए।

सत्संग के अंतराय से तप

प्रश्नकर्ता : सत्संग में आने का संयोग न मिले तो उस समय तप करना है न?

दादाश्री : हाँ, तब तप करना है। घर के लोग

रुकावट डालें उस समय तप करना है। वे रोकते हैं तो वह इसलिए कि अपने अंतराय हैं। तो उस समय किसी भी तरह का उल्टा-सुल्टा नहीं करना है, उस समय तप करना है।

प्रश्नकर्ता : किसी के प्रति ऐसा विचार नहीं आना चाहिए कि ये लोग मुझे क्यों मना कर रहे हैं?

दादाश्री : ऐसा कुछ भी नहीं, उल्टा किए बिना तप ही करना है। वे तो निमित्त हैं बेचारे।

बिगड़े नहीं मन के परिणाम, वह खरा तप

जबकि आपको तो अंदर ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप। चौथा स्तंभ, वह आंतरिक तप है आपका। बाह्य तप आपके लिए नहीं है। और जो आ पड़ते हैं वे बाह्य तप तो आसानी से रहते ही हैं आपको। अब लोगों को तो बाह्य तप में क्या आया? तो वह है कि बाप बड़ी उम्र के बेटे को डाँटता है। बेटे के घर भी बेटा हो फिर भी बाप डाँटता है। उस समय ज़्यादा कषाय करे और दुःखी होने के बजाय सहन कर लेना चाहिए। समभाव से, शांत भाव से। उसे तप करना कहते हैं। और कब कहा जाएगा कि तप किया है, ‘मन में परिणाम न बिगड़ें, तब तप किया कहा जाएगा। सामनेवाले के प्रति मन के परिणाम नहीं बिगड़ें तो उसे तप करना कहेंगे। यदि मन बिगाड़कर सहन करें तो उसका कोई अर्थ नहीं है।’

समताभाव, वही आंतरिक तप है

प्रश्नकर्ता : आप जिस आंतरिक तप की बात कर रहे हैं, वह समताभाव ही है न?

दादाश्री : बिल्कुल समताभाव। करेक्ट।

कोई मेहमान आपके घर रहने आएँ तब अंदर अकुलाहट होती हो और बाहर, कहेगा, ‘भाई शांति से रहना।’ और चेहरा तो बिल्कुल भी आनंद में नहीं होता। वह समझ जाता है कि साहब का चेहरा उतर गया है। अब, मन में क्या होता है कि अब

कब जाएगा? यह कब जाएगा? वह तो संयोग है, ऐसे नहीं सोचना चाहिए। उसके लिए खराब विचार आएँ तो प्रतिक्रमण करना है। अंदर तप होता ही रहेगा। और दो-तीन दिन के बाद सामान समेटने लगे तो हम समझ जाएँगे कि अब जानेवाला है। तब ज़रा मज़ाक करने के लिए कहना, 'अभी और दो दिन तक नहीं जाना है आपको।' तब वे कहेंगे, 'हं, मैं तो चला जाऊँगा। मेरी कॉर्ट की तारीख है।' देखो, ये संयोग वियोगी स्वभाव के हैं, कुछ भी कहना ही नहीं पड़ेगा। अपने आप ही चला जाएगा, इसलिए समता रखो। समता का मतलब क्या है? अंतर तप में तपो।

अटैक नहीं, वही सम्यक तप

भगवान ने कौन सा तप करने को कहा था कि कलियुग में वे तप करना जो घर बैठे आ मिलें। यह मुफ्त में तप आया है, कौन छोड़े? अभी कोई जेब काट जाए, बस में बैठे थे और इस जेब में पाँच-सौ थे और दूसरी में ग्यारह-सौ थे। ग्यारह-सौ वाली काट ले जाए तो फिर तुरंत अंदर से वृत्तियाँ शोर मचा देती हैं कि उसे तीन-सौ देने थे, उसे पाँच-सौ देने थे। हम समभाव से निकाल करें न तब वृत्तियाँ क्या कहती हैं? 'नहीं, नहीं। यह क्या समभाव से निकाल कर रहे हो?' तब उस समय हमें तप करना है। उस समय हृदय लाल-लाल हो जाएगा। उसे देखते रहना है। अंदर अकुलाहट होती है। तब हमें ऐसा समझना है कि आज, कल जितना लाल नहीं है। और वह जब कम होता जाए तब समझना कि हाँ, कम हो गया है अब।

जैसे यह ग्रहण होता है न, तो ग्रहण बढ़ते-बढ़ते हम समझ जाते हैं कि अभी बढ़ रहा है, अभी बढ़ रहा है और फिर बढ़ जाने के बाद उतरता है। तब हम कहते हैं, 'अब ग्रहणमुक्त होने लगा है, अब एक घंटे बाद सभी कुछ करेंगे' लेकिन हम जानते हैं कि इस एक घंटे के बाद में ग्रहणमुक्त हो

जाएगा। यह तप कुछ समय के लिए है, फिर खत्म हो जाएगा। लेकिन हृदय तपता है। और जगत् के लोगों को तपता है न, वह जब तपता है तो उनसे सहन नहीं हो पाता इसलिए अटैक कर लेते हैं सामनेवाले पर। आप अटैक नहीं करते हो और तपने देते हो। ऐसा होता है या नहीं होता? अटैक करने से तपना बंद हो जाता है इसलिए नया लोन लेकर और पुराना रीपे करते हैं। जबकि इस तप में तो नया लोन लिए बिना पुराना रीपे करना है। मुश्किल हो जाता है, नहीं? मुश्किल हो जाता है।

एक अमरीकावाला मुझसे कहता है, 'तप कब ज्यादा करना पड़ता है?' मैंने कहा, 'जॉब चली जाए उस दिन!' अमरीका में जॉब जाने में देर नहीं लगती। इसलिए उस दिन सचमुच में तप आ जाता है। उस समय तो खूब तपता है अंदर, रात को नींद न आए ऐसा तपता है। वह तपे उसके बावजूद भी अटैक नहीं, नो अटैक। मानसिक अटैक नहीं, हाथ से अटैक नहीं, वाणी से अटैक नहीं। तीनों ही प्रकार से अटैक नहीं। अगर यह ज्ञान नहीं हो तो कितने प्रकार के अटैक कर लेता है इंसान? मन से अटैक करता है, पलंग में सोते-सोते कहता है, 'सुबह ऐसा कर दूँगा, वैसा कर दूँगा।'

प्रश्नकर्ता : देह से और वाणी से नहीं होता है लेकिन मानसिक अटैक तो हो ही जाता है।

दादाश्री : हो जाए तो हमें प्रतिक्रमण कर लेना है। वास्तव में नहीं होता, लेकिन अगर बहुत तप गया हो तब ज़रा मानसिक हो जाता है तो फिर वापस प्रतिक्रमण कर लेने चाहिए। इसे सम्यक् तप कहते हैं। किसी की दखलंदाजी के बिना तप। हमें वही करते रहना है। ऐसा तप तो सभी को आता है। कोई भी बच नहीं सकता! जिस चीज़ के लिए एक बार तपना पड़े, उस बारे में, उस तप के जाने के बाद वापस फिर से नहीं तपना पड़ता। अतः तप जितने कम हो गए उतना ही निबेड़ा आ गया।

ज्ञानीपुरुष ऐसा स्पष्ट समझा देते हैं। कलियुग में प्राप्त तप को भोगना। जो तप आ पड़े हैं, उतने भोगो तो बहुत हो गया लेकिन उन्हें भोगना नहीं आता, वहाँ पर मारा-मारी और अटैकिंग सबकुछ कर लेता है। सामने उसके विरुद्ध व्यापार कर देता है।

किसी को दुःख न हो वही सब से बड़ा तप

बिल्कुल भी दुःख न हो, वही सब से बड़ा तप है। जबकि लोग तो दूसरी तरह से तप करने निकले हैं। अरे भाई, यह तप कर न! किसी को दुःख न हो उस घड़ी हमें वह (सहन) जो करना पड़ता है, वह बड़ा तप है, ज़बरदस्त तप है।

फर्क है, तप और आर्तध्यान में

प्रश्नकर्ता : मन बहुत उछल-कूद कर रहा हो तो ज्ञान से तपाना, तो वह कभी आर्तध्यान में चला जाए, ऐसा हो सकता है?

दादाश्री : नहीं। उसे आर्तध्यान कहा ही नहीं जा सकता न! तप कहते हैं उसे तो। आर्तध्यान में आएगा ही नहीं न! आर्तध्यान तो, उसमें करनेवाला चाहिए, मैं पना चाहिए न!

प्रश्नकर्ता : दादा, यानी कि मोक्ष में जाने के लिए ऐसा तप करना ज़रूरी है?

दादाश्री : नहीं, वह तो अपने आप हो ही जाता है। ज़रूरत नहीं है, रहता ही है। वह नहीं हो, तो छूटेगा ही नहीं न! ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप, चौथा स्तंभ रहेगा ही और अगर तप नहीं करेगा तो पीछे रह जाएगा, तो फिर से वापस वैसे का वैसे ही रह जाएगा।

अदीठ तप से होता है छुटकारा

अदीठ तप अर्थात् कोई पार्टी के पास एक महीने पहले ही लाख रुपये जमा किए हों और पार्टी डूब जाए तो सुनते ही अंदर तप शुरू हो जाता है आपका। आपको उस समय तप कर लेना है। आप

अगर तप करके बिल्कुल समता रखो और उनके लिए आनेवाले खराब विचारों के प्रतिक्रमण करो, तो फिर आपने क्लियर रखा। उस पर उस क्लियरनेस का असर पड़ता है।

आर्तध्यान-रौद्रध्यान नहीं होते, तप शुरू हो जाता है। जहाँ पर ज्ञान नहीं हो, उसे आर्तध्यान-रौद्रध्यान होता है। और यह तो तप में तपता है। इस तरह से तपता है वास्तव में! यानी आपके तप तो, किसी ने ऐसे अपमान किया कि तप होता है।

यह ज्ञान प्राप्त करने के बाद में अगर कोई इंसान आपके पास आए और वह आपको कुछ कड़वा पिलाए, तो उस समय भीतर हार्ट लाल हो जाता है, उस समय आप ज्ञान में स्थिर हो जाओ और हार्ट को देखते रहो कि कितना तप रहा है तो इसी को भगवान ने ज्ञान-तप कहा है। संसार अवस्था तो कुदरती रचना है, उसमें अस्थिर क्या होना?

तप कच्चा, आश्वासन लेने से

प्रश्नकर्ता : लेकिन कभी ऐसा होता है कि बहुत भारी कर्म का उदय आए और सहन नहीं हो तब हम अपने दूसरे नंबर की फाइल से बात करते हैं, ताकि हमें कुछ आश्वासन जैसा मिले। तो ऐसा करने से हमारे (कर्म) भोगने में कोई कमी रह जाती है क्या?

दादाश्री : दूसरे का आश्वासन लेने से तो यह कच्चा ही रह जाएगा न! यह तो ऐसा है कि 'मैं जला' और वह जले हुए पर ज़रा पानी लगा देता है। उसे तो पूरा ही भोग लेना पड़ेगा। फिर भी अगर सहन नहीं हो तो बता देना।

प्रश्नकर्ता : सहन नहीं होता इसीलिए हम यह बात कर रहे हैं। आश्वासन लेते हैं तो वह तो कह दिया जाता है, तो क्या वह टेपरिकार्ड नहीं है?

दादाश्री : टेपरिकार्ड ही है न! तूने उपाय ढूँढा न! अगर सहन हो जाता तो नहीं कहते न!

सहन नहीं होता है इसलिए कहते हैं। यों उपाय ढूँढ लिया!

डिप्रेशन के सामने जागृति वहाँ पर तप

भूख लगे और टाइम पर खाना नहीं मिला हो तो उस समय उपाय ढूँढे उसे भगवान ने गुनाह कहा है। उस समय आत्मा है, ऐसा पता चल जाता है। कब पता चलता है? वास्तव में डिप्रेशन आने पर अगर शांति रखे तब आत्मा का पता चलता है। उसका उपाय किया कि मारा गया। डिप्रेशन के उपाय के लिए संसार किया। डिप्रेशन में ही आत्मा का पता चलता है।

डिप्रेशन वह तप कहलाता है और तप में आत्मा का पता चलता है लेकिन उसे खो देते हैं ये बच्चे बेचारे! समझ नहीं है न! आत्मा कब मिलता है?

प्रश्नकर्ता : दुःख में।

दादाश्री : जब चारों तरफ से खूब उपसर्ग और परिषह हों तब आत्मा मिलता है। तुझे समझ में आ रहा है? हाँ, तो अब क्या करेगा?

प्रश्नकर्ता : अब खो नहीं दूँगा।

दादाश्री : डिप्रेशन में कोई उपाय नहीं करना है। डिप्रेशन जैसी तो कोई दवाई नहीं है इस दुनिया में। इन नासमझ लोगों ने धूल में मिला दिया है सबकुछ। नासमझ लोग। बहुत मजबूत होना है। सूखकर मर जा लेकिन अब जो एकाकार हो जाएँ, वे कोई और। आप जुदा और हम जुदा, ऐसा कहना। उस समय चमकारा होगा।

यह तो ऐसा है कि बहुत भूख लगे तो किसी की भी जूठन खा लेता है। इज्जत दिस द वे? (क्या यह मार्ग है?) अब ये जंगली नहीं तो और क्या कहलाएँगे? लोगों की जूठन खानी है या दूढ़ रहना है? ऐसा रौब रखे तब आत्मा हाज़िर होता है। क्या करेगा अब?

प्रश्नकर्ता : अभी तक तो जब डिप्रेशन आता था तो उसे दूर करने के उपाय करते थे।

दादाश्री : डिप्रेशन तो हितकारी है अब। सब से अधिक हितकारी तो डिप्रेशन है।

प्रश्नकर्ता : यह अब फिट हो गया है।

दादाश्री : फिट हुआ है लेकिन मेरा कहना है, कि डिप्रेशन में से खुद को अब निकल जाना चाहिए न?

प्रश्नकर्ता : वह निकल रहा है।

दादाश्री : निकल रहा है लेकिन उसमें से अब निकल ही जाना चाहिए। क्या पड़ा है इसमें? शुद्ध ही कर देना है। कि 'चंदूभाई सूख-सूखकर खत्म हो जाएगा तो भी यह अलग है तुझ से अब।'

तप से प्रकट होता है आत्मा

प्रश्नकर्ता : फिर भी दादा, क्या यह बात सही है कि निश्चय से पूर्ण हो गया है? लेकिन व्यवहार से तो बाकी रहा न!

दादाश्री : तो वह, व्यवहार से बाकी रहा। वह तो हमें अगर कोई भी व्यवहार चलाना नहीं आए तो क्या करते हैं हम? अब गाँव (मंज़िल) दो मील दूर है, और आठ मील चलने के बाद तू मुझ से कहेगा 'मुझे वापस डिप्रेशन आ रहा है और मैं वापस चला जाऊँगा!'

प्रश्नकर्ता : नहीं, ऐसा नहीं कहेंगे।

दादाश्री : वापस चला जाऊँ। आठ मील वापस आ जाता है लेकिन दो मील के लिए आए हुए गाँव तक जाना छोड़ देता है। जब डिप्रेशन आता है तब आत्मा प्रकट होनेवाला हो, तब मुआ छोड़ देता है।

लोग तो बल्कि आत्मा प्रकट करने के लिए तप करते हैं। आज खाना नहीं है। खाना-करना नहीं

वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी - अमरेली त्रिमंदिर तीर्थक्षेत्र



वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी

अमरेली त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव : दि. 8 फरवरी 2015

श्री सीमंथर स्वामी



श्री कृष्ण भगवान्



श्री शिव भगवान्

दादावाणी

चांद्रायण यक्षदेव



पांचागुली यक्षिणीदेवी



ऋषभदेव भगवान



अजितनाथ भगवान



ईशा माताजी



भद्रकाली माताजी



चक्रेश्वरी देवी



खोडियार माताजी



साई बाबा



दादा नीरुमा



गणपतिजी



ध्वज लहराया गया



हनुमानजी



पद्मावती माताजी



पद्मनाभ प्रभु





हैं और ऐसा करके अंदर जब दुःख होता है तब आत्मा प्राप्त होने की किरण दिखाई देती है। उसके बजाय ये तो जब तप आता है, तब ऐसा पागलपन करते हैं। समझ ही नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : उसका अर्थ ऐसा हुआ कि जब डिप्रेशन आए तो उस समय आत्मा जल्दी प्रकट हो जाता है ?

दादाश्री : इसीलिए तो यह तप कर रहे थे अभी तक वहाँ गुफा में जाकर, बैठकर।

प्रश्नकर्ता : डिप्रेशन लाने के लिए ?

दादाश्री : हाँ।

प्रश्नकर्ता : इसीलिए महावीर स्वामी ने अनार्य देश में जाकर सामने से दुःख मोल लिए ?

दादाश्री : नहीं! उन्हें दुःख नहीं था। उन्हें तो कर्म खपाने के लिए अनार्य देश में जाना पड़ा। कर्म खपाने के लिए ऐसा तप किया।

जो गुफाओं में साधना करता है, भूखा रहता है, ऐसे सब वहाँ तप करता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन ज्ञानी से समझ प्राप्त किए बिना तप ले तो मारा जाएगा न ?

दादाश्री : वह तो अज्ञान तप कहलाता है। अज्ञान तप में तो जहाँ पर देव हैं न, वहाँ पर जगह मिलती है, लेकिन ज्ञानी की समझ से यदि स्वीकार करे, तो मोक्ष होता है।

अगर तप में फेल तो दोबारा तप आएगा

प्रश्नकर्ता : अपने लिए प्राप्त तप है। उसमें ऐसा सुनते हैं कि 'जब हृदय तपकर लाल-लाल हो जाए तो उसके ज्ञाता-दृष्टा रहो' लेकिन जब वास्तव में ऐसा कुछ आकर खड़ा रहता है तब खुद को ज्ञान में रखकर वह जो जागृति आनी चाहिए उस समय वैसा कुछ नहीं रहता। ऐसा क्यों ?

दादाश्री : नहीं क्यों हो सकता वैसा ? पुरुष होने के बाद पुरुषार्थ नहीं हों ऐसा कहीं होता होगा क्या ?

तप करते समय विचलित नहीं हो जाना, उसी को तप कहते हैं। आप तो अगर उस समय स्थिर रहकर उसे पूरा कर लो तो तप हो गया। अगर विचलित हो जाएँगे तो फिर वह तप फिर से आएगा। तप में फेल हुए तो फिर से आएगा वापस। पास हुए कि छूट गए।

अंदर तप जाए, लाल-लाल हो जाए तो देखते रहना है। संयोग है इसलिए वियोग हुए बगैर रहेगा ही नहीं न! इसलिए अगर आप पूछो कि 'यह तप कब बंद होगा?' तो कहते हैं, 'नहीं, उसका वियोग हो रहा है।' वह तप, अन्य कोई तप नहीं है। भूखा रहना, वैसा तप नहीं है। वह तो जो भी आता है व्यवस्थित में, थाली में जो आता है वह सबकुछ खाना है।

शारीरिक कमजोरी वगैरह आए, तो वहाँ पर तप करना है ताकि शुद्ध हो जाए। जितना तप नहीं किया है उतना तप आएगा। जैसे-जैसे तप करेंगे वैसे-वैसे चोखा होता जाएगा।

संसार में रहे पक्के, वे तप में पड़े कच्चे

प्रश्नकर्ता : दादा, ये भाई जो तप करते हैं, उनके जैसा तप हम में उत्पन्न हो तो अच्छा, ऐसा लगता है।

दादाश्री : तुझे इनके जैसा तप नहीं आएगा। तुझे तो कला आती है न, जिसे कला नहीं आए उसे तप होता है। तुझे यहाँ से मोटरवाला उतार दे तो तू उसे समझाकर वापस बैठ जाओगे। लेकिन यह तो उतर पड़ेगा क्योंकि समझाना नहीं आता है न! इसलिए इसे तप करना पड़ेगा जबकि तू समझाकर वापस बैठ जाएगा। नहीं बैठ जाएगा ?

प्रश्नकर्ता : दादा, ऐसी समझ ही नहीं है कि यहाँ पर तप करना है, नहीं तो तप कर लूँ।

दादावाणी

दादाश्री : तप करने की जगह पर तू समझाकर बैठ जाए तो फिर तप होगा ही नहीं न तुझ से! इसे ऐसा करना नहीं आता इसलिए तप करना पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : इस तप की वेल्यू समझ में नहीं आती है न!

दादाश्री : ये खड़े ही नहीं रहते न! तप की वेल्यू ही नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : इसीलिए वह कोई और टेढ़े रास्ते ढूँढ निकालता है।

दादाश्री : हाँ, लेकिन संसार में वही सीखा है न! इसलिए उसी तरह चलता रहता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अब तो हमने बदल लिया है न!

दादाश्री : हाँ, धीरे-धीरे बदलेगा। एकदम से नहीं बदल सकता न! ऐसा कुछ भी नहीं है कि ये भाई कुछ समझकर यह तप करते हैं, वह तो अपने आप ही उदय आया है। उसका कोई पुण्य जागा एकदम से और मैंने कहा कि 'अलग रखना', इसलिए रह गया। नहीं तो तन्मयाकार ही हो जाता था। स्ट्रोंग उपाय किया न तो बस अलग ही रहता है। नहीं तो कोई अर्थ ही नहीं है, 'तेरा मनुष्यपना यूजलेस जाएगा', ऐसा कहा।

प्रश्नकर्ता : हमें थोड़ा तप बताईएगा, दादा। कुछ तरह के तप करना सिखलाईएगा, दादा।

दादाश्री : अच्छा है। और वे भी मोटे तप हैं सारे, खादी के। यह (अंतर तप) तो मलमल का तप कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन इच्छा जरूर है तप करने की।

दादाश्री : वह तो होनी ही चाहिए न! तप करेगा तभी मार्ग प्राप्त कर सकेगा इस संसार में। संसार में तो तू बहुत अक्लमंद माना जाता है।

दुःख होने पर उसे देखते रहना, वही तप है

प्रश्नकर्ता : दादा, कभी खीज जाते हैं तो होता है कि दादा क्यों खीज गए? और कभी ऐसा होता है कि जब मुझ पर खीज जाते हैं तो मुझे अच्छा नहीं लगता।

दादाश्री : कब खीजते हैं तुझ पर।

प्रश्नकर्ता : मुझ पर नहीं लेकिन सभी पर जब कभी खीजते हैं न, हाँ, कभी नहीं भी खीजते हैं तो आप तो उसे झटकने के लिए, उसे साफ करने के लिए करते हैं। उसे समझाने के लिए ही करते हैं फिर भी दुःख हो जाता है!

दादाश्री : उससे भी दुःख होता है? ये लोग कोट झाड़ते हैं तो क्या उससे भी दुःख होता है? कोट में धूल लग गई हो तो उसे ऐसे-ऐसे करना चाहिए या झाड़ना पड़ता है?

प्रश्नकर्ता : वह तो मैं समझता हूँ फिर भी ऐसा होता है।

दादाश्री : इंसान में धूल पड़ी हुई हो तो तब झाड़कर उसे निकाल देते हैं। रिपेयर नहीं करना है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, रिपेयर तो करना है इसीलिए ही।

दादाश्री : वह जो दुःख होता है न, वह दुःख होगा तभी रिपेयर होगा। इसीलिए जब दुःख हो तब आपको खुश ही होना है, 'बहुत अच्छा किया।' उससे पाप जल जाएँगे। जलते समय जरा दुःख होता है लेकिन उसे तप कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन समझ थोड़ी कम हो तभी दुःख होता है न?

दादाश्री : हाँ। उसी को तप कहते हैं न, तप

प्रश्नकर्ता : नासमझी का दुःख है।

दादाश्री : अंदर दुःख होता हो उसे देखते रहना, वही तप है।

समझो कीमत, विशेष आज्ञा की

आपके मन में ऐसा नहीं होना चाहिए कि पूरे दिन रोज सत्संग करवाते रहते हैं। मन में इतना विचार आना चाहिए कि 'ओहोहो! मुझे आज्ञा दी! नहीं तो आज्ञा लाए कहाँ से! आज आज्ञा मिली है दादा की!'

आपको तो प्रेम के खातिर करना है। अपने खुद के लिए करना है। आज्ञा ही धर्म है और उसी से मोक्ष होगा। आप ठेठ दूसरे शहर से यहाँ पर आए हो और एक ही घंटे में विधि करके मैं कहूँ कि 'वापस जाओ' तो मन में इतना अधिक आनंद हो जाना चाहिए कि, 'अहा, मुझे आज्ञा मिली! इसलिए पालनी ही है।', ऐसा नक्की हो जाना चाहिए। उस समय इतना आनंद होगा! ऐसे में क्या करोगे आप?

प्रश्नकर्ता : दादा ने कहा है तो वह करेक्ट है, ऐसा करके चले ही जाएँगे।

दादाश्री : नहीं, लेकिन उसका कोई अर्थ नहीं है। उससे लाभ नहीं होगा, उस समय।

प्रश्नकर्ता : हाँ, ऐसी समझ होनी चाहिए।

दादाश्री : 'मुझे आज्ञा मिली! ऐसी आज्ञा तो मुझे ज़िंदगी में कभी नहीं मिल सकती।' इतनी कीमत है आज्ञा की। 'किसी जगह पर मुझे मना नहीं करते।' मेरा पुण्य कितना उजला होगा कि आज मुझे आज्ञा मिली! उससे खूब आनंद होना चाहिए अंदर। उसका हेतु देखना, ज्ञानीपुरुष की आज्ञा ही धर्म है और वही तप है। खुद की इच्छा से करना, वह जोखिम है। उनकी आज्ञा का पालन नहीं किया अर्थात् खुद की इच्छा से करने गया। पालन करना ही हो तो करना लेकिन मुँह बिगाड़कर करे तो कितना जोखिम है! उससे दादा के प्रति अभाव हो सकता है कभी। आज्ञा तो सब से बड़ा उपहार है। किसे मिलती है? 'वहाँ से दर्शन करने आया बड़ौदा, कितनी परेशानी उठाकर लेकिन दादा ऐसा कह रहे हैं, तो मेरा पुण्य कितना ज़बरदस्त होगा! यों तो

कोई कहते ही नहीं हैं न? पागल हों, फिर भी दादा नहीं कहते। ये क्या कुछ कहें ऐसे हैं? दादा ऐसा कहेंगे क्या? लेकिन कितना पुण्य है मेरा कि मुझे ऐसी आज्ञा हुई।' आज्ञा के पालन से मोक्ष हो जाता है, भयंकर पाप भस्मीभूत हो जाते हैं। इसलिए आज्ञा को समझो। भगवान ने कहा है कि आज्ञा ही धर्म है और आज्ञा ही तप है। खुद की समझ से नहीं चलना है।

खुद का तरीका डाला कि सबकुछ बिगड़ा। खुद की अक्लमंदी से चलना, वह स्वच्छंद है। अभी पता नहीं चलेगा लेकिन वह तो जब उगेगा तब पता चलेगा।

दुःख और आनंद, तप में दोनों ही एक साथ

प्रश्नकर्ता : लेकिन तप में भी आनंद हो सकता है या नहीं?

दादाश्री : तप में हमेशा एक तरफ दुःख उठाता है और तप के ज्ञाता-दृष्टा रहने का आनंद रहता है। तप में तपता ज़रूर है लेकिन फिर अंदर आनंद रहता है। इन चंदूभाई का उनके ऑफिस में आकर किसी ने अपमान किया कि, 'आपको व्यापार करना नहीं आता है और आपने हमें परेशान कर दिया।' इस तरह से जैसे-तैसे कुछ शब्द कह जाए तो तुरंत ज्ञान पर अपनी दृष्टि आ जाती है कि 'अपना ज्ञान क्या कहता है?' 'इस फाइलों का समभाव से निकाल करो' ऐसा होता है न? अब उसने जो कहा, उसे इस शरीर में मन वगैरह जो हैं न उन्होंने पकड़ लिया तुरंत। अंतःकरण तुरंत पकड़ लेता है और उसके सामने जवाब देता है, हिंसक जवाब देने के लिए अंदर लाल-लाल हो जाता है लेकिन उस घड़ी अगर यह जवाब नहीं दे और ऐसा पक्का रखे कि समभाव से निकाल करना है तो फिर, 'ओ हो हो, अंदर लाल-लाल-लाल हो गया है', जब ऐसा देखता है उस समय आत्मा क्लियर हो जाता है। जो तप को देखता है वह क्लियर आत्मा है। वह जब लाल-लाल को देखता है तो फिर उसका सब शांत हो जाता है। हमेशा ही जो कोई भी संयोग आता है वह

लाल का हो या ठंडक का हो लेकिन वह वियोगी स्वभाव का होता है। वह उफान थोड़ी देर बाद बैठ जाता है लेकिन एक बार तो बहुत ही तप जाता है। उसे फिर अगर यों इस अभ्यास से देखें तो आनंद हो जाता है लेकिन तप तो जाता ही नहीं है। वह तप तो रहता ही है।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा है कि उसका समभाव से *निकाल* करना और एक बार आपने सिखाया था कि अपना ही वापस आया है।

दादाश्री : उसका समभाव से *निकाल* करने को क्यों कहा है? क्योंकि वह वापस आया है। इसलिए उसका समभाव से *निकाल* करना है। उसे लक्ष्य में रखकर होता है यह सब। एक-एक वाक्य अनुसंधान में हैं!

समभाव से *निकाल* का निश्चय वही पुरुषार्थ

प्रश्नकर्ता : इसमें मुख्य चीज हमें यह लक्ष्य में रखनी चाहिए कि समभाव से जगत् में बरतते रहो।

दादाश्री : बस, हमें समभाव से *निकाल* करना है। आपको तो सिर्फ आज्ञा का पालन करना है, वही समभाव से *निकाल* है। फिर सामनेवाला इंसान न करे वह बात डिफरन्ट मेटर (अलग चीज) है। सामनेवाला उल्टा चल रहा हो तो उससे हमें कोई परेशानी नहीं है। उसके लिए हम ज़िम्मेदार नहीं हैं।

सामने से कोई इंसान आ रहा हो, हम जानते हैं कि यह इंसान अभी गरम हो जाएगा तो हमें पहले से ही मन में नक्की करना है कि समभाव से *निकाल* करना है। इसके बावजूद भी वह इंसान गरम हो गया और साथ ही चंदूभाई भी गरम हो गए, आपने तय किया हो, फिर भी चंदूभाई गरम हो गए, फिर भी उसे समभाव से *निकाल* करना कहेंगे। आपका डिसिजन क्या था? समभाव से *निकाल* करना था। फिर भी अगर तीर छूट गया तो उसके लिए आप रिस्पोन्सिबल नहीं हो।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अगर हम सामनेवाली फाइल के साथ एडजस्ट हो जाएँ, तो उसे समभाव से *निकाल* करना कहेंगे न?

दादाश्री : आपको तो उस फाइल के आते ही मन में नक्की हो जाना चाहिए कि, 'फाइल के साथ झंझट है तो अब समभाव से *निकाल* कर देना है।' ऐसा नक्की करने के बाद मैं आपसे जो हो जाता है, वही करेक्ट। वह सारी तो कुदरती रचना हैं। उसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है। अगर नहीं हुआ है तो फिर से *निकाल* करना ही है, उसमें पुरुषार्थ भाव है। आपसे कहा हो कि यह जो स्लोप है न, वह चिकनी जगह है, गिर जाओगे, इसलिए इस फाइल का समभाव से *निकाल* करना। उसके बाद समभाव से *निकाल* करने का तय करके आप अंदर जाओ और फिसल जाओ तो उसमें आपत्ति नहीं है। मेरी आज्ञा में रहे या नहीं? और अगर आज्ञा में रहे तो उसे दूसरा गुनाह नहीं लगता।

समभाव से *निकाल* करने जैसा तो अन्य कोई तप नहीं है। वह सब से बड़ा अंतर तप है।

पुरुषार्थ तप सहित ही होता है

प्रश्नकर्ता : क्या व्यवस्थित ऐसा ही गढ़ा हुआ है कि उदय में तन्मयाकार रहना है?

दादाश्री : ऐसा ही व्यवस्थित है। उसी को उदय कहते हैं। उदय में तन्मयाकार रहने का व्यवस्थित होता ही है और उसमें से पुरुषार्थ करना है, उस समय तप हुए बगैर रहता ही नहीं।

ये सभी सूक्ष्म बातें हैं, कब कात पाएगा वह? जैसे-जैसे कातेगा वैसे-वैसे पता चलेगा।

प्रश्नकर्ता : इसमें उदय तो व्यवस्थित के अधीन है। खुद नासमझी से तन्मयाकार हो जाता है। आज यह बात नई बताई।

दादाश्री : नई ही है, पहले से है ही यह। यह तो तीर्थकरों के पास पहले से था ही और आज

भी है। तू अपने तरीके से अपनी लॉ बुक बनाए तो फिर उसमें मैं क्या करूँ?

तप वह पुरुष होने के बाद का पुरुषार्थ

प्रश्नकर्ता : इस तप में भावना क्या करनी, यह तो ओटोमेटिक हो जाता है न?

दादाश्री : कहीं ओटोमेटिक होता होगा? तप तो करना है। पुरुषार्थ करना है। वह क्या ओटोमेटिक होता होगा? वह क्या डिस्चार्ज चीज़ है? कैसे लोग हो? ऐसा ढूँढते हो? वह तो पुरुषार्थ है। यह तो पुरुष होने के बाद का पुरुषार्थ है, यह तो जबरदस्त पुरुषार्थ है। देखना, पुरुष होने के बाद फिर पुरुषार्थ क्या रहा? ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप!

प्रश्नकर्ता : तप क्या व्यवस्थित में नहीं आ जाता?

दादाश्री : नहीं। व्यवस्थित में कहीं तप होता होगा? ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप व्यवस्थित में नहीं होते। वे पुरुषार्थ की चीज़ हैं। व्यवस्थित में तो प्रारब्ध है, डिस्चार्ज चीज़ें!

इन भाई से बड़ी भूल हो गई थी, इसलिए भूल का खेद कर रहा था और तप कर रहा था। उसके बाद इसने, इसके भाई से कहा, तो इनके भाई ने कहा कि 'डिस्चार्ज है।' इसलिए फिर यह जो तप कर रहा था वह भी बंद हो गया। इन्हें भान नहीं है, इसलिए इसने बिगाड़ दिया। एक तरफ तप करना है और दूसरी तरफ प्रतिक्रमण करना है। और यह डिस्चार्ज देखने ही बैठा है न! लेकिन ऐसे तो दुरुपयोग कर लिया। जो सभी को डिस्चार्ज कहता है, उस पर बहुत असर होता ही नहीं। वैसा का वैसा ही रह जाता है फिर। जहाँ पर तप है, वहाँ पर पुरुषार्थ करना रह जाता है और उसे व्यवस्थित में रख देता है। 'डिस्चार्ज है', कह देता है।

प्रश्नकर्ता : पुरुषार्थ नहीं हो पाए, तो और कोई दूसरा शोर्ट कट बता दीजिए न!

दादाश्री : यह शोर्ट कट ही बताया न! शोर्ट कट ही है यह। वह डिस्चार्ज है। उसके बाद फिर तप है। तप से पुरुषार्थ करना है। यह शब्द दुरुपयोग करने के लिए नहीं है। तप करो। क्या करेंगे तो तप कहलाएगा? मन अंदर परेशान करे, तब तप करना है। डिस्चार्ज का अर्थ ही यह है कि डिस्चार्ज हमेशा तप सहित होता है। यों ही डिस्चार्ज कह दिया तो नहीं चलेगा न! ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप। तप नहीं हो तो ज्ञान-दर्शन शुद्ध ही नहीं हो पाएँगे। तप, जिसे तप आए वह उत्तम है और फिर किसी को नहीं आए तो तप खत्म हो गया इसलिए नहीं आ रहा है। लेकिन तप में तो ठेठ तक तपते ही रहना है। जब तक शुद्ध न हो जाए, संपूर्ण न हो जाए, तब तक वह तप है।

तन्मयाकार नहीं होना, वही तप

अब हमें तप क्या करना है? ये जितने तप जो आँखों से दिखाई देते हैं, कान से सुनाई देते हैं, वे सभी तप 'सफल' है। सफल अर्थात् फलसहित हैं। बीज के रूप में हैं, अतः फल देंगे। इसलिए यदि तुझे छूटना है तो 'सफल' तप नहीं चलेगा, निष्फल तप की ज़रूरत है। जिससे फल नहीं आए और तपना पड़े। तो ये सभी जो तप की क्रियाएँ चल रही हैं जगत् में, उनसे तो अगले जन्म का पुण्य बंध जाएगा। आपने यह जो ज्ञान लिया है इसलिए आपको इस ज्ञान में ही रहना है। अगर कोई आकर परेशान करे, 'साहब आप, ऐसा क्यों हमारा बिगाड़ रहे हो वगैरह-वगैरह।' तब आपको उलझन तो होती ही नहीं है इस ज्ञान से। आप सोल्यूशन ला सकते हो, लेकिन चंदूभाई पर थोड़ा बहुत असर हो जाएगा, इसलिए अंदर चंदूभाई का खुद का ही हृदय तपता है और पहले तो ऐसे समय में तन्मयाकार हो जाते थे। अब नहीं होना है, वह तप है। पहले तो हृदय थोड़ा सा भी तपा कि तन्मयाकार लेकिन इसमें तन्मयाकार नहीं होना, वही तप है। अतः यह तप ही मोक्ष में ले जाएगा।

अतः भगवान ने ऐसा तप करने को कहा है। तब अगर हम ऐसा कहें कि 'भाई, हमें किसी बाह्य तप की जरूरत नहीं है।' तो लोग समझेंगे कि 'भगवान का तप इन्होंने उड़ा ही दिया!' अरे नहीं भाई, तप के बिना मोक्ष होगा ही नहीं। लोग उल्टा समझें तो हम क्या करें फिर? और एट-ए-टाइम (एक समय में) एक शब्द निकलता है, वह नेगेटिव और पॉजिटिव दोनों को एक साथ नहीं बता सकता। या तो पॉजिटिव बताता है या नेगेटिव बताता है। फिर से नेगेटिव बोलें तो वह बात अलग है, लेकिन शब्द एट-ए-टाइम दोनों भाव नहीं बता सकते न!

अपने महात्मा लगभग पाँच ही प्रतिशत तप करते हैं। तप तो करना चाहिए न? अभी आपको समभाव से *निकाल* करना पड़ता है, उस घड़ी तप नहीं करते?

प्रश्नकर्ता : करना ही पड़ता है न, दादा।

दादाश्री : वे भी छोटे-छोटे, लेकिन फिर उसके बाद बड़े तप होने चाहिए। बेटा मर जाए, या रास्ते में कोई एक लाख रूपए के गहने लूट ले, तब भी असर नहीं, पेट में पानी तक नहीं हिले। यह दादा का विज्ञान है। यदि बुद्धि के कहे अनुसार किया, तो जैसे थे वैसे के वैसे ही हो गए न वापस! वहाँ पर तप करना है। रास्ते में लूट ले जाए तो क्या करते हो आप?

प्रश्नकर्ता : हाय-हाय तो नहीं करते लेकिन वे चीजें वापस मिलें या न भी मिलें, उसकी बहुत नहीं पड़ी होती लेकिन 'मुझे लूट ले गया', ऐसा तो मन में रहा करता है।

दादाश्री : उससे हमें क्या फायदा मिलेगा? उससे हमें क्या हेल्प होगी वह देखना है न? वे लूटते नहीं हैं। जो उनका था वही वे ले जा रहे हैं। अपना कोई ले ही नहीं जा सकता।

प्रश्नकर्ता : अंदर तप किस तरह से उत्पन्न होता है? लूट लेने के बाद में क्या करना चाहिए?

दादाश्री : जब वह तपने लगता है तो फिर तप सहन नहीं होता इसलिए वह खुद शोर मचाकर रख देता है, वह खुद भी तप जाता है। वहाँ पर ज्ञान से तप करना है।

किसी भी स्थिति में समता, वही तप

प्रश्नकर्ता : ज्ञान से एडजस्ट हो जाते हैं, पाँच आज्ञा से, लेकिन अंदरवाले ऐसा शोर मचाते रहते हैं कि 'लूट लिया।'

दादाश्री : उस समय हृदय तपता है। सहन नहीं होता। विचार पर विचार, बवंडर उठेंगे सारे। समय तपे हुए को देखते ही रहना है। उस समय मन नहीं बिगड़ना चाहिए सामनेवाले के लिए। अगर थोड़ा सा भी मन बिगड़ें तो उसे तप कहेंगे ही कैसे? किसी भी स्थिति में समता ही रहे तो वही अदीठ तप! और क्या है! सबकुछ खुद का ही है, औरों का नहीं है। औरों का हो तो ऐसा नहीं हो सकता कि आपको भोगना पड़े, इसीलिए उसमें प्योर रहना है। प्योर बनना है, इम्पयोरिटी नहीं रहनी चाहिए। सभी कचरा निकल जाए न, दादा के पास आकर तो सभी कुछ निकल जाता है। आपने ऐसा बदलाव नहीं देखा!

ये बाहर के तप तो लोगों को दिखाई देते हैं और अंदर के तप तो सिर्फ हम खुद ही जानते हैं। जहाँ नापसंद हो वहाँ पर स्थिर रहना। नापसंद हो उसके बावजूद भी किसी को परेशानी न हो, उस तरह से शांति से रहना चाहिए। जबकि लोग तो तप आने पर हावी हो जाते हैं। खुद का बचाव करते हैं, हमें बचाव नहीं करना है। बचाने का भाव हुआ अर्थात् उस तप का पूरी तरह से लाभ नहीं लिया। वह तो रिश्वत ले ली हमने।

प्रश्नकर्ता : अदीठ तप करें, तो उसे समभाव से *निकाल* करना कहा जाएगा न?

दादाश्री : सारा *निकाल* हो जाएगा। उसमें अगर रिश्वत ले लें तो वह ज़रा बाकी रह जाता है

वहाँ पर, जितनी रिश्तत लेते हैं उस अनुपात में बाकी रह जाता है और *निकाल* करो तो वह चला जाता है। उस समय (व्यवहार) आत्मा हलका हो जाता है और आनंद ही रहता है। बहुत तप जाने के बाद में क्या करते हो? शोर मचाकर रख देते हो? ऐसे कलह की है? किसी का गुस्सा किसी और पर निकालता है फिर। जो फाइल हो उस फाइल के साथ आमने-सामने ही हल ला देना है। दूसरी फाइल का और उसका कनेक्शन नहीं है, वर्ना किसी का गुस्सा किसी पर निकल जाएगा।

‘उस’ में से अलग रखना है ‘खुद को’। यों तो जब एक होने लगे, तब खुद अलग रहता है लेकिन अगर कोई कहे, ‘आपने हमारा पाँच हज़ार का नुकसान कर दिया।’ ऐसा कहने पर उस समय एकाकार हो जाता है। उस समय तप करना था। उस समय धक्का लगता है कि, ‘मैंने तो किया ही नहीं है।’ धक्का क्यों लगता है? मन में ऐसा होता है न कि इसने मुझ पर आरोप लगाया। इसलिए फिर ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’ रहेगा या वैसा रहेगा? उस समय तप करके वापस से ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’ ऐसा रहना चाहिए।

आत्मा खुद ही परमात्मा हैं। वह तप स्वरूप नहीं है, जप स्वरूप नहीं है। बाकी की ये सारी कल्पनाएँ हैं। ‘स्वरूप का भान’ हो जाने के बाद में ही ये बाकी सब संयोग बंद हो जाते हैं।

अदीठ तप करने से जाया जा सकता है दर्शन से ज्ञान में

‘मैं शुद्धात्मा हूँ’, वह दर्शन है। जब उसका अनुभव होता है तो वह ज्ञान है। वैसा जो तप करता है ज़बरदस्त, तब दर्शन में से ज्ञान प्राप्त होता है। जितना अनुभव उतनी ही वीतरागता और उतना ही चारित्र। तप करने से चारित्र उत्पन्न होता है। तप को देखना और जानना वही चारित्र। अतः ये ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप, इस चौथे स्तंभ का *निकाल* तो करना ही पड़ेगा न? तब अंदर हृदय तपता है, उसे हमें देखते रहना है उसी को तप कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : तप का मतलब क्या है? अंदर घर्षण होता है?

दादाश्री : नहीं, अंदर *अजंपा* (बैचेनी) होता है और अकुलाहट होती है, बाहर मुँह पर नहीं कहता लेकिन अंदर ही अंदर अकुलाहट हो जाती है। उस तप को सहन करना पड़ता है। बाहर तो फाइलों का *निकाल* करते हैं समभाव से, लेकिन भीतर अंदर जो अकुलाहट हो जाती है उसे सहन किया और वह भी सामनेवाले को दुःख पहुँचाए बिना शांति से सहन किया, उसे तप कहते हैं। उसे अदीठ तप कहा है।

हमें अपने महात्मा कहते हैं, ‘हमारा इतना खराब व्यवहार हो जाता है, फिर भी आपको कुछ नहीं होता?’ मैंने कहा, ‘मुझे क्या होगा लेकिन? वह तो अनुभव में आ गया है, उसमें और क्या हो सकता था? वह तो आप कहते हो कि मुझे बताइएगा इसलिए बताता हूँ, वर्ना मैं मुँह पर कहूँ भी नहीं तुम्हें।’

अदीठ तप से स्व-चारित्र

प्रश्नकर्ता : हम रोज़ दादाजी की आरती करते हैं तब अदीठ तप की पंक्ति आती है,

‘चौथी आरती दादानी अदीठ तप करे,
ज्ञान-अज्ञान भिन्न भेदी, स्व-चारित्र लहे।’

दादा तब लगता है कि अभी उसी दशा में हैं।

दादाश्री : हाँ, उसे अगर भेदता (जुदापना) रहे न तो स्व-चारित्र में रहता है। और अगर भेदता नहीं रखी तो वहाँ पर-चारित्र की दशा में है। तो वे कौन से मील पर हैं वे कहें न, तब समझ जाना है। कौन से माइलेज पर हैं वे, वह आप समझ जाओ।

प्रश्नकर्ता : हाँ दादा। अदीठ तप अपने ही कर्मों का उदय हैं न?

दादाश्री : सभी कुछ खुद का है, औरों का कुछ है ही नहीं। औरों का होता तो ऐसा नहीं हो सकता कि आपको भोगना पड़े।

जो आ पड़ें, वे तप करने हैं। प्राप्त अर्थात् सामने आते ही गाली दे दी, तो समझना कि यह कोई तप आ पड़ा है। तब उसे कहना कि भाई मेरी कोई भूल हो गई होगी इसीलिए गाली दे रहे होंगे न? वरना यों तो कहीं कोई देता है?

अंतर तप बनाए भगवान

प्रश्नकर्ता : तप के समय समझ कैसी होनी चाहिए?

दादाश्री : मेरे हित में ही हो रहा है। दादा कहते हैं वह सब मेरा और दादा नहीं कहते हैं, वह सब मेरा नहीं है, ऐसे जुदा कर दो अंदर।

प्रश्नकर्ता : इतना अधिक जल रहा होता है और ऐसा लगता है कि सहन नहीं होगा फिर भी अंदर ऐसा रहता है कि 'यह हितकारी है, काम का है, इसे बुझा नहीं देना है', ऐसा रहा करता है फिर।

दादाश्री : ज्ञान नहीं जलेगा, जो अज्ञान है वही भाग जलेगा। अतः तुझे संभालकर सो जाना है। जलने देना है, भले ही जल जाए सबकुछ। ज्ञान का नहीं जलेगा, उसकी हम गारन्टी देते हैं।

अंतर तप तो भगवान बनाता है। जहाँ पर अंतर तप होता है, वहाँ पर जानना कि ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप चार स्तंभ हैं, ऐसा तय हो जाता है। अगर सिर्फ ज्ञान व दर्शन हों, तब चार स्तंभ पूरे नहीं होते। अतः तू पुण्यशाली है कि तेरा अंतर तप चलता रहता है। वह उत्पन्न करने से उत्पन्न नहीं होता। हम जानबूझकर खड़ा करने की कोशिश करें, फिर भी होता है क्या? अभी कोई ऐसे करके हाथ पकड़े और कहे, 'कहाँ जा रहा है, चल।' तब वहाँ पर तप शुरू हो जाता है।

संयोगों में स्थिरता रखते हैं ज्ञान से

इन संयोगों की वजह से दुःख हैं अभी तक। यदि संयोग नहीं हों न, तो कोई भी दुःख है ही नहीं। संयोग वियोगी स्वभाव के हैं यानी कि वे हमेशा के लिए नहीं रहेंगे।

संयोग खुद ने कर्ताभाव से खड़े किए हैं, लेकिन यदि वियोग खुद को करना पड़ता तो वह कभी छूट ही नहीं पाता। कर्ताभाव से यदि वियोग होता, तो जब तक कर्ताभाव है तब तक मुश्किल खड़ी होती। अतः वियोग अकर्ता भाव से करना है, संयोग कर्ताभाव से हुआ है। हाँ, अतः ये वियोगी स्वभाव के हैं, लोगों को अच्छा नहीं लगता। अतः 'यह सुख आया था तो वह सब चला गया।' तब मैं कहता हूँ, 'क्या आया?' तब कहते हैं, 'यह दुःख आ गया और सुख चला गया।' 'तो फिर यह भी चला जाएगा भाई। छोड़ न! ये वियोगी स्वभाव के हैं।'

ज्ञान अस्थिर नहीं है। ज्ञान का स्वभाव ही स्थिर है। सबकुछ चला जाएगा, कहाँ से कहाँ चला जाएगा। ज़रा देर हो जाए तो उस समय तप करना, वही तप है। वह आंतरिक तप है। यह बाह्य तप नहीं है, आंतरिक तप है।

संयोग उनकी जगह खाली करने के लिए आए हैं, तो फिर आपको धीरज तो रखना पड़ेगा न! भगवान ने तप करने को कहा है। संयोग उल्टे नहीं हैं, आपके तप करने में कमी है।

प्रश्नकर्ता : ऐसे तप आएँ, तो अच्छा है न, दादा?

दादाश्री : रियली! इस दुष्काल के जीव कितने पुण्यशाली हैं कि घर बैठे तप मिलते हैं!

आज्ञा ही ऐसी हैं कि आसानी से होता है तप

प्रश्नकर्ता : 'आणाए धम्मो और आणाए तप्पो' कहा गया है न?

दादावाणी

दादाश्री : 'आणाए धम्मो ने आणाए तप्पो।' 'आज्ञा ही धर्म और आज्ञा ही तप है।' महावीर भगवान ने क्या कहा है कि हमारी जो आज्ञा लिखी है, वही धर्म और वही तप है।

प्रश्नकर्ता : इन पाँच आज्ञा में रहना क्या वह पुरुषार्थ कहलाता है ?

दादाश्री : हाँ, आज्ञा में रहना ही पुरुषार्थ है, वही धर्म और वही तप है।

जब तक तप है, तब तक प्रज्ञा है। तब तक मूल स्वरूप नहीं है। आत्मा में तप नाम का गुण ही नहीं, वह तप प्रज्ञा करवाती है।

आज्ञा में सभी कुछ आ गया। फिर और कुछ करने को रहा ही नहीं। यदि ज्ञानीपुरुष मिल जाएँ तो उनकी आज्ञा में ही रहना है।

धर्म कौन सा करना है? 'ज्ञानीपुरुष' की आज्ञा में रहना, वही। आज्ञा ही धर्म और आज्ञा ही तप है।

आपको अब शुद्धात्मा के प्रति प्रेम रखने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि आप उस रूप तो हो ही चुके हो। अब किससे प्रेम करोगे? आपको ज्ञान-दर्शन और चारित्र शुरू हो गया है! नहीं तो 'देखने-जानने' पर राग-द्वेष होता है। देखे-जाने उस पर राग-द्वेष नहीं हो, वह वीतराग चारित्र कहलाता है।

अब तो आपका चारित्र भी उच्च हो गया है। यह तो ग़ज़ब हो गया है! लेकिन अब उसे संभालकर रखो तो अच्छा! कोई चॉकलेट देकर चूड़ियाँ नहीं छीन ले तो अच्छा। अब तो आपको ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप सभी कुछ चलता रहेगा। लेकिन तप का आपको पता नहीं रहता कि कहाँ पर तप हो रहा है! हमारी 'आज्ञा' ही ऐसी है कि तप करना ही पड़े!

जागृति के मार्ग पर प्रगति का स्तंभ तप

बात को समझें तो इस दुनिया में कुछ दुःख

है नहीं और अगर नहीं समझें और (खुद) प्रयोग में हाथ डाल दें, तो उसमें प्रयोग बेचारा क्या करे फिर? प्रयोग तो कहेगा, 'मैं ऐसा हूँ, ऐसा तू जानता है फिर भी हाथ डाल देता है, तो उसमें मैं क्या करूँ?'

प्रश्नकर्ता : हाथ डालेगा तो इफेक्ट होगा ही।

दादाश्री : हाँ, यों तेरा हाथ जल जाएगा ऐसा तू जानता है, इसके बावजूद भी तू वापस हाथ डाल देता है। और ऐसे करते-करते ज्ञान फिट हो जाएगा। भगवान ने यह जो तप का स्तंभ रखा है, वह गलत नहीं रखा है। उसे भुगते बिना चारा ही नहीं है। वैसा तप तो रहता ही है इंसान को।

प्रश्नकर्ता : तो तप किए बगैर कोई चारा ही नहीं है। और वह उसका खुद का ही हिसाब है न, किसी और का नहीं।

दादाश्री : हाँ, लेकिन तप करना ही पड़ता है। तपना ही पड़ता है। अब अगर दादा दूर रहें तो तपना नहीं पड़ता। तब फिर आपकी प्रगति भी नहीं होगी। तपना पड़े, तभी प्रगति होती है।

पुरुषार्थ-पराक्रम के बीच, तप की सीढ़ी

अदीठ तप अर्थात् ज्ञान और अज्ञान को जुदा-जुदा ही रखने के पुरुषार्थ से जो पराक्रम करना पड़ता है, वह। फॉरेन डिपार्टमेन्ट (अनात्म विभाग) के मच्छर हम से हाथ मिलाने आते हैं, लेकिन हम उन्हें हाथ नहीं देते और होम डिपार्टमेन्ट (आत्म विभाग) में ही रहते हैं। इससे हमें तप नहीं करना पड़ता। लेकिन महात्मा भूल से हाथ दे देते हैं इसलिए हृदय तपता है। लाल-लाल हो जाता है। उसे समताभाव से सहन कर लें तो उसका समभाव से निकाल हो जाएगा। हृदय तपाकर सह ले और उस समय खुद संपूर्ण ज्ञाता-दृष्टा पद में ही रहे कि हृदय का तपना कब शुरू हुआ और कितना तपा, कितना

पारा चढ़ा वगैरह-वगैरह और उसमें हाथ नहीं डाले। यदि हाथ डालेंगे तब तो सचमुच में जल जाएँगे!

तप होने पर ही अनुभव होगा न! वर्ना अनुभव किस तरह से होगा? जिस बारे में अपना अंतर तपता है उससे अलग रहने की कोशिश करें और अंतर तपता रहे तो उस बारे में हमें अनुभव होगा ही।

ये सभी जो मौके आते हैं, वे आपको अनुभव देने के लिए आते हैं। यों ही नहीं आ जाते। कोई धौल लगा दे, तो क्या यों ही लगा देता है? मुफ्त में लगा दी? वह अनुभव देकर जाता है। कोई धौल लगाए तो अनुभव देगा। तुझे दे तो ध्यान रखना। जब यह तप पूरा हो जाएगा तो उसका निकाल हो जाएगा। वह छूट जाएगा और वही उसका अनुभव। वही आत्मा का अनुभव है, बस! सुख और प्रकाश बढ़ते जाते हैं, उसके बाद में गजब का परमानंद प्राप्त होता है। अंदर अनंतानंत शक्तियाँ बढ़ जाती हैं!

जब यह अदीठ तप संपूर्ण हो जाएगा तब, आप महात्माओं को हमारे जैसा रहेगा। हमें अब तप नहीं रहें। जो तपा हुआ होता है उसे तप आता है। हमें भी जब ज्ञान नहीं था तब खरा तप करना पड़ता था। जो भी जहर का प्याला देकर गया उसे हम आशीर्वाद देकर हँसते-हँसते पी गए!

तप (के लिए) तो निश्चय बल की जरूरत है। जो होना हो वह हो लेकिन हम अब तुझ से फसेंगे नहीं। अनंत अवतारों से इतने फँसे हैं, अब नहीं फसेंगे, ऐसा निश्चय। हम अब ध्येय को तोड़ना नहीं चाहते। निश्चय नहीं हो तो मिठास खींच ले जाएगी तुरंत। खुद का ध्येय साकार करना हो तो पसंदीदा चीज़ छोड़ देनी पड़ेगी। जब तक ध्येय अगर डावाँडोल रहेगा तब तक कुछ नहीं हो सकेगा।

तप से प्रकट आत्म ऐश्वर्य

प्रश्नकर्ता : दादा, ये अदीठ तप करते हैं, तो वह कर्तापद में नहीं जाता?

दादाश्री : नहीं, अदीठ तप अर्थात् आत्मा का ही तप, पुरुष का पुरुषार्थ। डॉक्टर ने कहा हो कि अब दो दिन भी टिक सके ऐसा नहीं है और वह टिक सके ऐसा होता है, तो उसके मन में ऐसा होता है कि ओह! अब क्या होगा? तो अंदर उथल-पुथल होती रहती है। उस समय तप करना है। मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार ये सभी शोर मचाएँ, तब उन्हें देखते रहना है। अपनी बात है या किसी और की बात है? अगर हाँ, तो टिकेगी। तो वह जाए तो जाएगा लेकिन तप करते रहना है आपको। अपनी चीज़ें प्रकट होती हैं! बल्कि ऐश्वर्य प्रकट होता है! एक बार तप करने से तो कितना ऐश्वर्य प्रकट हो जाता है! एक मात्र घर हो और वह घर जल रहा हो, तो वह तो जाना ही है। बाल्टियाँ उठाकर सब जगह पानी डालना है। बाहर सभी बाह्य क्रियाएँ करनी हैं लेकिन अंदर तप रहना चाहिए कि इसमें से अपना था क्या और रहा क्या? ये अपना नहीं हैं ऐसा रहना चाहिए।

तप हुआ कि आत्म ऐश्वर्य प्रकट होता है और वह आत्म ऐश्वर्य इस सम्यक दर्शन से प्रकट हुआ। यह ज्ञान जो हम देते हैं, उसमें तो आपका कोई पुरुषार्थ नहीं है न? फिर धीरे-धीरे ज्ञान में पुरुषार्थ होगा, जैसे-जैसे वह अनुभव में आएगा वैसे-वैसे।

दादा का ऐश्वर्य प्रकट हुआ है। यह सारा ऐश्वर्य, अपार ऐश्वर्य प्रकट हुआ है, जो इन लोगों ने देखा नहीं है अभी तो! इतना ऐश्वर्य प्रकट हुआ है। जैसे-जैसे निकलेगा वैसे-वैसे पता चलेगा कि यह किस तरह का ऐश्वर्य है! और उतना ही ऐश्वर्य हर एक आत्मा में है। ऐश्वर्य प्रकट नहीं हुआ है और प्रकट हो जाए तो उसे व्यक्त कहते हैं। अभी आप में अव्यक्त भाव से पड़ा हुआ है और हमारा ऐश्वर्य व्यक्त हो चुका है।

- जय सच्चिदानंद

दादावाणी

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत**
- + 'आस्था' पर सोम से शनि रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)
 - + 'दूरदर्शन'-बिहार पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० तथा रविवार शाम ५-३० से ६ (हिन्दी में)
 - + 'दूरदर्शन'-भोपाल पर सोम से शुक्र दोपहर ३-३० से ४ (हिन्दी में)
 - + 'दूरदर्शन'-गिरनार पर हर रोज सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में)
 - + 'अरिहंत' पर हर रोज सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
 - + 'दूरदर्शन'-सहायद्रि पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० (मराठी में)
- USA**
- + 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत**
- + 'दूरदर्शन-नेशनल' पर हर मंगलवार से शुक्रवार सुबह ९-३० से १० (हिन्दी में)
 - + 'साधना' पर हर रोज शाम ७-१० से ७-४० (हिन्दी में)
 - + 'दूरदर्शन' गुजरात -गिरनार पर सोम से शनि दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
 - + 'दूरदर्शन' गिरनार पर हर रोज रात ९ से ९-३० (गुजराती में)
 - + 'अरिहंत' चैनल पर हर रोज रात ८-३० से ९ (गुजराती में)
- USA**
- + 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ११ से ११-३० EST
- UK**
- + 'वीनस' टीवी पर हर रोज सुबह ८-३० से ९ (गुजराती में)
- Singapore**
- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० (हिन्दी में)
- Australia**
- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ७-३० से ८ (हिन्दी में)
- New Zealand**
- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ९-३० से १० (हिन्दी में)
- USA-UK-Africa-Aus.** + 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज रात ९-३० से १० (गुजराती में)

Form No. 4 (Rule No.8)

Information about 'Dadavani' Hindi Magazine

- 1. Place of Publication :** 5, Mamtapark Society, Bh. Navgujarat College, Usmanpura, Ahmedabad-14.
- 2. Periodicity of Publication :** Monthly
- 3. Name of Printer :** Amba Offset, **Nationality :** Indian,
Address : Basement, Parshvanath Chamber, Near New R.B.I. Usmanpura, Ahmedabad-380014
- 4. Name of Publisher :** Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, **Nationality :** Indian,
Address : 5, Mamtapark Society, Bh. Navgujarat College, Usmanpura, Ahmedabad-14.
- 5. Name of Editor :** Dimple Mehta, **Nationality :** Indian, **Address :** same as above.
- 6. Name of Owner :** Mahavideh Foundation (Trust), **Nationality :** Indian,
Address : same as above.

I, Dimple Mehta hereby declare that the above stated information is correct to my knowledge and belief.
sd/-

Date : 15-03-2015

Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
(Signature of Publisher)

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345 #. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. ३ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, ई-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाइट्स

३० जनवरी से १ फरवरी : मुंबई के आजाद मैदान में सत्संग-ज्ञानविधि का कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिनमें १३०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया और छः हजार से भी ज्यादा लोगों ने कार्यक्रम का लाभ उठाया। सेवार्थी सत्संग में ६५० सेवार्थियों को पूज्यश्री के दर्शन और सत्संग का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पूज्यश्री मुंबई में वाल्केश्वर के सुप्रसिद्ध पद्मावती माताजी के मंदिर में दर्शन के लिए गए और जगत् कल्याण के लिए प्रार्थना की। ज्ञान प्राप्ति के लिए आए हुए मुमुक्षुओं में से ज्यादातर पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के टी.वी सत्संग कार्यक्रम देखकर आए हुए थे। सह्याद्री चैनल पर मराठी सत्संग सुनकर आए हुए मुमुक्षु मराठी में प्रश्न पूछ रहे थे।

३-४ फरवरी : भावनगर में दो दिन के सत्संग-ज्ञानविधि दौरान ७०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया और लगभग तीन हजार लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया। सेवार्थी सत्संग में ३५० सेवार्थियों ने पूज्यश्री के दर्शन का लाभ उठाया। आप्तपुत्र द्वारा हुए फॉलोअप सत्संग में ज्यादातर ज्ञान लिए हुए नए महात्मा आए थे।

६-८ फरवरी : अमरेली त्रिमंदिर के आँगन में दो दिन के लिए सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम का आयोजन हुआ। ज्ञानविधि में अमरेली और आसपास के गाँव से आए हुए २९०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। ८ फरवरी २०१५, रविवार के दिन आयोजित अमरेली त्रिमंदिर के प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव में अमरेली जिला तथा देश-विदेश से आए हुए लगभग १५००० महात्मा-मुमुक्षुओं ने कार्यक्रम में हिस्सा लिया। पूज्यश्री ने सुबह १० से दोपहर १ बजे तक एक-एक घंटे के तीन विभाग में मुख्य तीन भगवंतों और अन्य भगवंतों की प्राण-प्रतिष्ठा विधि की। प्रतिष्ठा के दौरान महात्माओं ने सामूहिक रूप से त्रिमंत्र, नमस्कार विधि और असीम जय-जयकार किए। पूज्यश्री ने प्रतिष्ठा के बाद प्रासंगिक उद्बोधन करते हुए कहा कि यहाँ पर स्थापित सभी भगवंतों की बहुत अद्भुत प्राणप्रतिष्ठा हुई है और श्री सीमंधर स्वामी भगवान की दिव्य चेतना यहाँ पर उतर आई है। दादा और नीरू माँ को सूक्ष्म स्वरूप से त्रिमंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा का आह्वान करते हुए पद गाया गया और तीनों शिखरों पर ध्वज लहराए गए। पूज्यश्री और आप्तपुत्रों द्वारा हजारों महात्माओं की उपस्थिति में दोपहर ४ से ७ दौरान तीर्थकर भगवंतों और अन्य सर्व भगवंतों का प्रक्षाल-पूजन-अर्चन और आरती की गई। इस अलौकिक प्रसंग को नजदीकी से निहारने मिलें इसलिए सभागृह में महात्माओं को तीन अलग-अलग समूह में बारी-बारी प्रवेश दिया गया। महात्मा और मुमुक्षुओं ने इस दिव्य प्रसंग का अनेरा आनंद उठाया और प्रतिष्ठित भगवंतों के भावपूर्वक दर्शन किए। रात को मंदिर में विशेष भक्ति का कार्यक्रम आयोजित किया गया। दूसरे दिन पूज्यश्री द्वारा दर्शनार्थियों के लिए मंदिर के मंगल द्वार खोले गए। मंदिर में पूजन-आरती के बाद सेवार्थियों के लिए पूज्यश्री का विशेष सत्संग-दर्शन का आयोजन हुआ, जिनमें स्थानिक महात्माओं ने खुद के सुंदर अनुभव बताए।

१२-१९ फरवरी : अडालज त्रिमंदिर संकुल में सोनेरी प्रभात सत्संग में 'अहिंसा' पुस्तक पर सत्संग-पारायण हुआ। सत्संग के दौरान महात्माओं ने हिंसा-अहिंसा से संबंधित कई नई समझ सूक्ष्मता से जानने को मिली।

१४ फरवरी को अंबा स्कूल फोर एक्सेलन्स के ८० बच्चों ने वार्षिक दिन पर अक्रम साइन्स की 'हमारी पहचान-अक्रम साइन्स' की थीम पर बहुत सुंदर विविध नृत्य तथा नाटक प्रस्तुत किए। महात्माओं ने रसपूर्वक इस कार्यक्रम का आनंद उठाया। उसके बाद दो दिन, शनिवार और रविवार को अंबा स्कूल के बच्चों द्वारा अक्रम साइन्स पर सुंदर प्रदर्शन का आयोजन हुआ।

१४ फरवरी को अडालज त्रिमंदिर संकुल में रहते ४४० ब्रह्मचारी भाईयों तथा बहनों ने पूज्यश्री संग भोजन-प्रसाद लिया और उनके साथ 'प्रेम और अभेदता' पर विशेष सत्संग किया। उसके बाद पू. नीरू माँ की स्पेशल विसीडी दिखाई गई।

मुख्य सेन्ट्रों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिर: (079) 39830100, अहमदाबाद: (079) 27540408, वडोदरा (दादा मंदिर) : 9924343335, राजकोट त्रिमंदिर: 9274111393, भूज त्रिमंदिर: (02832) 290123, गोधरा त्रिमंदिर: (02672) 262300, अमरेली त्रिमंदिर: 9924344460, मुंबई: 9323528901, दिल्ली: 9310022350, बैंगलूर: 9590979099, कोलकता: 033-32933885, यु.के.: +44 330-111-DADA (3232), यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), ऑस्ट्रेलिया: +61 421127947, केन्या: +254 722722063

दादावाणी

Atmagnani Pujya Deepakbhai's Germany-UK Satsang Schedule (2015)

Contact no. for all centers in UK + 44-330-111-DADA (3232), email: info@uk.dadabhagwan.org

Date	From	to	Event	Venue
27-31 March	TBA	TBA	Satsang & Gnanvidhi	Germany - Willingen
2-6 Apr-15	All Day	All Day	UK Shibir	Pakefield
8-Apr-15	7-30PM	10PM	Satsang	Nagreacha Hall, 202 Leyton Road, London, E15 1DT
9-Apr-15	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang	
9-Apr-15	6PM	10PM	Gnanvidhi	
10-Apr-15	7-30PM	10PM	Satsang For Mahatmas Only	Wanza Community Centre, Pasture Lane, Leicester, LE1 4EY
11-Apr-15	7-30PM	10PM	Satsang	
12-Apr-15	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang	
12-Apr-15	3PM	7-30PM	Gnanvidhi	
13-Apr-15	7-30PM	10PM	Aptaputra Satsang	
17-Apr-15	7-30PM	10PM	Satsang in English	
18-Apr-15	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang in English	
18-Apr-15	7-30PM	10PM	Satsang	
19-Apr-15	9-30AM	12-30PM	Simandhar Swami Pratishtha	
19-Apr-15	3PM	7-30PM	Gnanvidhi	
20-Apr-15	7-30PM	10PM	Satsang	

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

पटना	दिनांक : 28-29 मार्च - आप्तपुत्रों के संग सत्संग शिविर	संपर्क : 7352723132
	स्थल : ठाकुर प्रसाद कम्युनिटी होल, कीद्वाइपुरी, इन्कम टेक्ष के पास, गोलंबर (नोर्थ), पटना.	
गया	दिनांक : 30 मार्च समय : शाम 4 से 6	संपर्क : 9835623307
	स्थल : उत्सव मेरेज होल, आनंदी माई मंदिर के पास, जी.बी. रोड, गया.	
धनबाद	दिनांक : 31 मार्च समय : शाम 5-30 से 7-30	संपर्क : 9431191375
	स्थल : UG A आर.के. एपार्टमेन्ट, रिलायन्स स्टोर के पीछे, कटरास रोड, बैंक मोड, धनबाद.	
टाटानगर	दिनांक : 1 अप्रैल समय : शाम 4 से 6	संपर्क : 9709220292
	स्थल : हाउस नं ई - 599, तीसरी मंजील, बरतल्ला पुजा मैदान के पास, इस्ट लेआउट, जमशेदपुर.	
बालासोर	दिनांक : 2 अप्रैल समय : शाम 6 से 8-30	संपर्क : 9090276204
	स्थल : गांधी स्मृति भवन, स्टेशन स्क्वेयर के पास, बालासोर.	
भुवनेश्वर	दिनांक : 3 अप्रैल समय : शाम 6 से 8-30	संपर्क : 9668159987
	स्थल : रोटरी क्लब, लीक रोड नं-8, युनीट-9, होन्डा शो रूम के पीछे, भुवनेश्वर.	
कोलकाता	दिनांक : 5 अप्रैल समय : सुबह 10 से शाम 6	संपर्क : 9830093230
	स्थल : 42, लक्ष्मीनारायण मंदिर, सरत बोझ रोड, कोलकाता.	
बेंगलोर	दिनांक : 5 अप्रैल समय : सुबह 10-30 से शाम 6	संपर्क : 9590979099
	स्थल : महाराष्ट्र मंडल, नं-28, दूसरा क्रोस, गांधीनगर, बेंगलोर.	
हुबली	दिनांक : 8 अप्रैल समय : शाम 5-30 से 8	संपर्क : 9739688818
	स्थल : एन.के. सभागृह, एन.के. कोम्प्लेक्ष, केशवापुर सर्कल, हुबली.	
बेलगाम	दिनांक : 9 अप्रैल समय : दोपहर 3 से 5-30	संपर्क : 9945894202
	स्थल : श्री जीवेश्वर भवन, सोनार गली कोर्नर, मेईन रोड, एम. वडगाँव, बेलगाम.	
हुबली	दिनांक : 10 अप्रैल समय : शाम 4 से 6-30	संपर्क : 9480370961
	स्थल : श्री लक्ष्मीनारायण सनातन पाटीदार समाज, पाटीदार भवन, प्लोट नं-32, न्यु टीम्बर यार्ड, उन्कल, हुबली.	
हैदराबाद	दि : 11 अप्रैल संपर्क : 9414538411	चेन्नई दि : 6-7 अप्रैल संपर्क : 9380159957

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करें।

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में अडालज त्रिमंदिर में आगामी सत्संग कार्यक्रम

- दि. १९ मार्च (गुरु), - पूज्य नीरू माँ की 9वी पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम
सुबह ६-३० से ७ - प्रभात फेरी
सुबह ७ से ८ - प्रार्थना विधि तथा पूज्यश्री द्वारा संदेश - समाधि स्थल पर
सुबह १० से १२ - पू. नीरूमा की स्पे. वीसीडी तथा जगतकल्याण के लिए किर्तन भक्ति- दादानगर होल में
शाम ४-३० से ६-३० - आप्तसिंचन के नए साधको की समर्पण विधि - दादानगर होल में
रात ८-३० से १० - विशेष भक्ति कार्यक्रम - दादानगर होल में

दि. २०-२१ मार्च (शुक्र-शनि), शाम ४-३० से ७ - सत्संग तथा २२ मार्च (रवि), शाम ४ से ७-३० - ज्ञानविधि

PMHT (पेरेंट्स महात्मा) शिविर

दि. २-५ मई (शनि-मंगल) - सत्संग समय की घोषणा बाकी

सूचना : 1) यह शिविर ज्ञान लिए हुए विवाहित महात्माओं के लिए ही रखी गई है।

2) इस शिविर में प्रथम दो दिन 'मा-बाप बच्चों का व्यवहार' तथा बाद में दो दिन 'पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार' पुस्तक पर पूज्यश्री दीपकभाई द्वारा सत्संग होगा तथा आप्तपुत्र भाईयों द्वारा ग्रुप डीस्कशन (सत्संग) किया जाएगा। हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का एफएम रेडियो और हेडफोन लेकर आए। (अगर आपका मोबाइल में एफएम सुविधा है, तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर ही सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकते हैं।)

3) शिविर में भाग लेने के लिए दि. १२ अप्रैल २०१५ तक अपने नजदिकी सेन्टर में और अगर नजदिक में कोई सेन्टर नहीं है, तो अडालज त्रिमंदिर के फोन नं. (079) 39830400 (सुबह ९-३० से १२ तथा दोपहर ३ से ६) पर अपना रजिस्ट्रेशन करवाए।

हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष २०१५

सत्संग शिविर : दि. २८-२९ तथा ३१ मई, समय : सुबह ९-३० से १२, शाम ४-३० से ७

दि. ३० मई, समय : सुबह ९-३० से १२

ज्ञानविधि : दि. ३० मई, दोपहर ३-३० से ७

तीर्थ यात्रा : दि. १ जून - पूज्यश्री के संग गोधरा त्रिमंदिर, डाकोर तीर्थ.

सूचना : शिविर में भाग लेने के लिए दि. १५ मार्च से १५ मई २०१५ तक अपने नजदिकी सेन्टर में और अगर नजदिक में कोई सेन्टर नहीं है, तो अडालज त्रिमंदिर के फोन नं. (079) 39830400 (सुबह ९-३० से १२ तथा दोपहर ३ से ६) पर अपना रजिस्ट्रेशन करवाए।

- यदि आप 1 जून को आयोजित यात्रा में शामिल होनेवाले हों, तो आपका वापसी टिकट 2 जून का लें।

- अहमदाबाद रेल्वे स्टेशन से अडालज त्रिमंदिर पहुँचने के लिए सिटी बस 89/1 और ओटो रिक्शा, टेक्सी मिलेगी।

बच्चों-युवकों के लिए इस शिविर के दौरान अलग से विशेष संस्कार सिंचन शिविर का आयोजन किया गया है।

अडालज में अविवाहित युवकों के लिए हिन्दी में ब्रह्मचर्य शिविर - दि. २-३ जून, २०१५

जो युवक इस ब्रह्मचर्य शिविर में भाग लेना चाहते हैं, उसकी उम्र २१ से ३५ के बीच और आत्मज्ञान लिए कम से कम १ साल हुआ होना जरूरी है। कृपया अधिक जानकारी और रजिस्ट्रेशन के लिए 9723707737 पर संपर्क करें।

अहमदाबाद

दि. १५-१६ मई (शुक्र-शनि), रात ८ से १०-३० - सत्संग तथा १७ मई (रवि), शाम ५-३० से ९ - ज्ञानविधि

दि. १८ मई (सोम), रात ८ से १०-३० - आप्तपुत्र सत्संग

स्थल : सरदार पटेल स्टेडियम, आश्रम रोड पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद (गुजरात).

संपर्क : 9909545999

मार्च 2015
वर्ष - 10 अंक - 5
अखंड क्रमांक - 113

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

मोक्ष में जाने के लिए जरूरत है, अंतर तप की

“बाहर कुछ होने पर जब हृदय तपे तब उसे देखना और जानना, वही तप है; उसे अंतर तप, अदीठ तप कहा है। मोक्ष में जाने के लिए अंतर तप चाहिए, मोक्ष में जाने के लिए बाह्य तप की जरूरत नहीं है। बाह्य तप से अच्छी गति मिलती है, लेकिन मोक्ष नहीं मिलता। अदीठ तप ऐसा होता है कि दिखाई नहीं देता। फॉरेन (अनात्मा)में प्रवेश नहीं करना और होम (आत्मा)में ही रहना, उसे ही भगवान ने ‘सच्चा तप’ कहा है। आत्मा और अनात्मा के छोर एक नहीं होने देना, वही सच्चा तप है। और यह तप किसलिए करना है? क्योंकि अनादि से फॉरेन का अध्यास है, इसलिए तप करना पड़ता है, इसके बावजूद इस तप में तप नहीं जाते (शारीरिक कष्ट उठाने नहीं पड़ते)।”

-दादाश्री



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.